मरकुस रचित सुसमाचार

मरकुस के अनुसार सुसमाचार (खुशी की खबर)

लेखकः

मरकुस बरनबास का चचेरा भाई था। विश्वस्त सूत्रों से मालूम पड़ता है कि उसने पतरस, बरनबास और पौलुस के साथ मिलकर सेवकाई की थी। 1 पतर. 5:13 से तुलना करें। यह संभव है कि जो कुछ उसने अपनी इस पुस्तक में लिखा वह उसे पतरस ने बताया था। मरकुस का दूसरा नाम यूहन्ना (प्रे.काम 12:12) था।

समयः

यीशु मसीह के मरने-जी उठने के कुछ वर्षों बाद। कुछ जानकार यह मानते हैं कि यह पुस्तक दूसरी अन्य पुस्तकों जैसे मत्ती, लूका और यूहन्ना द्वारा लिखी पुस्तकों, से पहले लिखी गयी। लेकिन हमारे पास इसका कोई ठोस सबूत नहीं है।

विषयः

मरकुस मसीह को परमेश्वर के पुत्र (देह में परमेश्वर) के रूप में प्रस्तुत करता है (1:1)। यह यीशु परमेश्वर और मनुष्य के सेवक बन गए और इन्होंने लोगों के बीच अद्‌भुत काम किए (प्रे.काम 10:38; रोमि. 15:8-9 से तुलना करें)। उन्हों ने दो बार यह बात कही कि दूसरों की सेवा ही सच्चा बड़प्पन (या सच्ची महानता) है (9:35; 10:42-45)। ऐसा उन्हों ने अपने जीवनकाल में कर भी दिखाया। यीशु मसीह की शिक्षाओं से अधिक मरकुस ने उनके कार्यों पर ज़ोर डाला। उदाहरण के लिए उसने चार दृष्टांतों का वर्णन किया, लेकिन अठ्ठारह आश्चर्यकर्मों का। मत्ती 14 दृष्टांतों और लूका 15 दृष्टांतों का वर्णन करता है। पहाड़ी उपदेश को मरकुस ने अपनी पुस्तक में स्थान नहीं दिया।

मुख्य शब्दः

जिनका उपयोग हुआ है, राजा, परमेश्वर का राज्य और पूरा हुआ आदि है।

1 परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह के
सुसमाचार की शुरुआत। 2यशायाह
नबी की किताब में लिखा है कि देखो,
मैं अपने दूत को तुम से पहले भेजूँगा, जो
तुम्हारे लिये रास्ता तैयार करेगा। सुनो,
3एक पुकारने वाले की आवाज़ जंगल
में सुनाई दे रही है कि प्रभु का रास्ता
तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी।
यह पुकारने वाला
4यूहन्ना आया, और वह पापों (गुनाहों)
की माफ़ी के मनबदलाव के लिए बपतिस्मे
का ऐलान करने के साथ लोगों को
यरदन नदी में बपतिस्मा दिया करता था।
5यहूदिया प्रान्त और यरूशलेम में रहने वाले
निकलकर उसके पास आए, जब उन्हों ने
अपने गुनाहों को माना तब यरदन नदी में
यूहन्ना ने उन्हें बपतिस्मा दिया। 6यूहन्ना ऊँट
के बालों का वस्त्र पहनता और कमर में
खाल का पटुका बान्धे रहता था। उसका
भोजन टिड्डियाँ और जंगल का शहद था।
7वह कहता था, मेरे बाद में आने वाले
मुझ से ज़्यादा ताकतवार हैं। मैं तो इस
लायक भी नहीं कि, झुककर उनके जूतों
का फ़ीता खोलूँ। 8मैंने तो तुम्हें जल में
डुबोया (बपतिस्मा दिया) है लेकिन यीशु
तुम्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देंगे।
9उन दिनों में यीशु गलील के नासरत से
आए और यरदन नदी में यूहन्ना से बपतिस्मा
लिया। 10पानी के बाहर आते ही यीशु ने
आसमान को खुलते और पवित्र आत्मा को
फ़ाख्ते की तरह अपने ऊपर उतरते देखा।
11तभी आसमान से यह आवाज़ गूँज उठी,
mतुम मेरे प्यारे बेटे हो, मैं तुम से खुश हूँ।"
12 तब परमेश्वर का आत्मा यीशु को
जंगल में ले गया। 13जहाँ चालीस दिन
(एक बड़े अर्से) तक शैतान उनके सामने
तमाम प्रलोभन लाता रहा। यीशु जंगली
जानवरों के साथ रहे तथा स्वर्गदूत उन
की सेवा करते रहे।
14यूहन्ना के हिरासत में ले लिए जाने के
बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर
के शासन (राज्य) का संदेश सुनाया।
15और कहा, "समय पूरा हुआ है और
परमेश्वर का शासन नज़दीक आ चुका
है। मन बदल डालो और खुशी की खबर
पर विश्वास लाओ।
16गलील की झील के किनारे जाते समय
यीशु ने शमौन और अन्द्रियास नामक मछुवों
को झील में जाल डालते देखा। 17यीशु ने
उन से कहा, "तुम मेरे शिष्य बन जाओ,
तब मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।
18तुरन्त जाल को छोड़कर वे यीशु के
साथ हो लिए।
19थोड़ा आगे बढ़ते ही यीशु ने ज़बदी के
बेटे याकूब और उसके भाई यहून्ना को, नाव
पर जाल को सुधारते देखा। 20बुलाने पर
वे अपने पिता ज़बदी को मजदूरों के साथ
नाव पर छोड़कर, यीशु के साथ हो लिए।

1:1 शब्द सुसमाचार यूनानी शब्द 'अच्छा समाचार' का ही अनुवाद है। इसलिए कि यह परमेश्वर का वह संदेश है जो मनुष्य को मुक्ति का रास्ता दिखाता है, यीशु के शिष्यों ने और यीशु ने उसे 'खुशी की खबर' या अच्छा समाचार कहा। 'यीशु' और 'मसीह' के अर्थ के लिए देखें। (मत्ती 1:1)

"परमेश्वर का बेटे"- मत्ती 1:18; 3:16-17; यूहन्ना 1:18; 3:16; 5:18-23.

1:2-3 मला. 1:2; यशा. 40:3; मत्ती 3:3; 11:10.

1:4 मत्ती 3:1-6; 9:5-7.

1:5-11 मत्ती 3:4-17.

1:12-13 देखे मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13. "यीशु की परीक्षा" - इस छोटे से ब्यौरे में, मरकुस एक सच्चाई को बताता है, जो दूसरे शिष्य नहीं बतलाते - वह है जंगली जानवरो की मौजूदगी। यह दिखलाता है कि यीशु वीरान और जंगली जगह में थे।

1:14 मत्ती 14:3.

1:15 मत्ती 3:2; 4:17.

1:16-20 मत्ती 4:18-22.

21कफ़रनहूम में सब्त के दिन आराधनालय
में जाकर यीशु सिखाने लगे। 22क्योंकि यीशु
धार्मिक शिक्षकों की तरह नहीं लेकिन बड़े
अधिकार के साथ सिखाते थे, इसलिए
लोगों को अचम्भा हुआ। 23तभी एक भूत
(दुष्टात्मा) पीड़ित इन्सान ने आराधनालय
में चिल्लाकर कहा, "हे नासरी यीशु, हमें ऐसे
ही रहने दें, हमारा आप से कोई सम्बध
नहीं। 24क्या आप हमें बर्बाद करने आए
हैं? मुझे मालूम है आप हैं कौन। आप तो
परमेश्वर के पवित्र जन हैं।"

25यीशु ने डाँटकर उससे कहा, खामोश
रह और उस में से बाहर निकल।

26तब वह भूत उसकी देह को मरोड़ते
हुए उस में से बाहर निकल गया। 27यह देख
आश्चर्य से भरे लोग आपस में चर्चा करने
लगे, "यह क्या? यह तो कोई नयी शिक्षा
है। यीशु अधिकार के साथ भूतों को हुक्म
देते हैं और भूत उनका हुक्म मानते हैं।"

28और यीशु का नाम तुरन्त गलील के
आस-पास के सारे प्रदेश में फैल गया।
29यीशु एक दम आराधनालय में से
निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ
शमौन और अन्द्रियास के घर आए। 30यीशु
को बताया गया कि पतरस की सास को
बुखार चढ़ा हुआ है। 31जैसे ही पास जाकर
यीशु ने पतरस की सास का हाथ पकड़कर
उसे उठाया, उसका बुखार उतर गया और
वह यीशु की आवभगत में लग गयी।

32शाम के समय सूरज ढलते ही लोग
यीशु के पास सब तरह के बीमारों को और
जिन्हें भूत लगा था, लाए। 33दरवाज़े पर ही
सारा नगर आ गया। 34यीशु ने तरह-तरह की
बीमारियों से दुखी बहुत से लोगों को ठीक
कर दिया और बहुत से भूतों को निकाला।
इसलिए कि भूत यीशु मसीह को पहचानते
थे, यीशु ने उन्हें खामोश कर दिया।

35दिन निकलने से बहुत पहले यीशु उठे
और जंगली जगह में जाकर प्रार्थना करने
लगे। 36तब शमौन और उसके साथी यीशु
को ढूँढने निकल पड़े। 37यीशु को पा लेने पर
वे बोले, "सब लोग आपको ढूँढ रहे हैं।"

38यीशु ने कहा, आओ हम सब आस
पास की दूसरी बस्तियों में जाकर लोगों
को सुसमाचार सुनाएँ, क्योंकि यही मेरा
काम है।

39इसलिए यीशु ने सारे गलील और
उनके आराधनालयों में जाकर सुसमाचार

1:21 "कफ़रनहूम"- मत्ती 4:13.

1:22 मत्ती 7:28-29.

1:23 "भूत"- मत्ती 4:24.

1:24 दुष्ट और गंदी आत्माओं या भूतों को यह ज्ञान था, कि अपनी ताकत और व्यक्तित्व में यीशु अनोखे थे।

"परमेश्वर के पवित्र जन"- नये नियम में सिर्फ़ यहीं पर ये शब्द इस्तेमाल किए गए हैं। लेकिन यीशु मसीह की पवित्रता सभी जगह है। (लूका 1:35; यूहन्ना 8:46; इब्रा. 4:15; 1 पतर. 2:21-24)

1:25 यीशु के पास सभी गंदी आत्माओं पर अधिकार था और है। (मीका 5:1-10; लूका 10:17)

1:27 लोग नयी शिक्षा से प्रभावित नहीं थे, लेकिन इसलिए कि यीशु के साथ बड़े-बड़े काम थे। (मत्ती 1:8 के नोट्स देखें।)

1:29-33 मत्ती 8:14-17.

1:34 पद 25; 3:12; 5:43; मत्ती 8:4; 9:30; 12:16.

1:35 यीशु अक्सर प्रार्थना करते थे। (मत्ती 14:23; 19:13; 26:36,39; लूका 5:16; 6:12; 9:29; 22:32; यहून्ना अध्याय 17; इब्रा. 5:7) कभी - कभी यीशु सुनसान जगह ढूँढते थे, ताकि प्रार्थना करें। जैसे एक इन्सान परमेश्वर से और अद्वितीय परमेश्वर के बेटे के रूप में-दोनों ही रूप में, उन्हों ने प्रार्थना की। कहने का मतलब यह है कि, परमेश्वरीय और मानवीय दोनों ही स्वभाव उनकी प्रार्थना में थे। (यहून्ना 19 अध्याय से तुलना करें)

1:38 देखें यशा. 61:1. यह तमाम कारणों में से एक था कि यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर आए। दूसरे कारणों के लिए (मत्ती 5:17 के) पद देखें।

1:39 मत्ती 4:23.

देना और भूतों को निकालना जारी रखा।
40वहीं पर घुटने टेकते हुए एक कुष्ट रोगी
ने बिनती की, "अगर आप चाहें तो मुझे
शुद्ध कर सकते हैं।"
41यीशु ने तरस से भरकर छूते हुए कहा,
"मेरी इच्छा है कि तुम शुद्ध हो जाओ।"
42तुरन्त उसका कोढ़ खत्म हो गया और
वह शुद्ध हो गया। 43सावधानी बरतने की
सलाह के साथ यीशु ने उसे विदा किया।
44और यह भी कि बिना किसी को कुछ
बताए वह खुद को पुरोहित के सामने पेश
करे। साथ ही यह कि सबूत के तौर पर
मूसा द्वारा निर्धारित भेंट को चढ़ाए।
45वहाँ से जाते ही वह सब जगह अपने
ठीक हो जाने का ढिंढोरा पीटने लगा। इस
वजह से यीशु का खुल्लम-खुल्ला घूमना कम
हो गया। लेकिन बाहर की वीरान जगहों
में यीशु रहे और आस-पास के लोग उनके
पास आते गए।

2 बहुत दिनों के बाद कफ़रनहूम के एक
घर में यीशु की मौजूदगी के बारे में कई
लोगों को पता लगा। 2बड़ी संख्या में लोगों
के आ जाने पर दरवाज़े के पास तक जगह
नहीं थी, लेकिन यीशु लोगों को परमेश्वर
की बातें (वचन) सिखा रहे थे। 3तभी
चार जन एक लकुवे के बीमार को उठाए
यीशु से मिलने पहुँचे। 4भीड़ की वजह से
यीशु तक न पहुँच सकने के कारण, उन्हों
ने छत पर जाकर खपरैल हटाए। फिर
बीमार आदमी सहित चारपाई को ऊपर
से लटकाकर यीशु के सामने रख दिया।
5उन चारों के भरोसे को देखकर यीशु
ने लकुवा पीड़ित से कहा, "बेटा तुम्हारे
गुनाह माफ़ हो चुके हैं।"
6तब वहाँ बैठे तमाम धार्मिक पण्डित
अपने मनों में सोचने लगे, "यह इन्सान
(यीशु) ऐसा क्यों कह रहा है? 7यह तो
परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर
को छोड़ और कौन है जो गुनाह माफ़ कर
सकता है।
8तुरन्त यीशु ने अपनी आत्मा में जान
लिया कि वे अपने - अपने मन में क्या
सोच रहे हैं। उन से यीशु ने कहा, "तुम
अपने अन्दर यह ख़्याल क्यों आने दे रहे
हो? 9क्या लकुवे से पीड़ित व्यक्ति से
कहना कि उसके गुनाह माफ़ हो चुके हैं
यह सरल है, या यह कि अपनी चारपाई
उठा कर वापस जाओ?" 10लेकिन उन्हें
यह सिखाने के लिए कि पाप क्षमा करने
का अधिकार भी यीशु के पास है, 11यीशु
ने उस अपंग से कहा, "अपनी चारपाई
उठाकर घर जाओ।"
12उसी समय वह आदमी उठा, अपनी
चारपाई उठाई और सब के देखते-देखते
चला गया। यह देख सभी अचरज से भरकर
कहने लगे, "हम ने ऐसा कभी नहीं देखा है।"
13वहाँ से निकलकर यीशु झील के
किनारे गए जहाँ सारी भीड़ उनके पास
दौड़ी चली आयी और यीशु उन्हें सिखाने
लगे। 14जाते वक्त यीशु ने हलफ़ई के बेटे
लेवी को टैक्स की गद्दी पर बैठे देखा और

1:40-43 मत्ती 8:1-4.
1:45 स्वास्थ्य के लिए धन्यवाद के साथ यीशु की आज्ञा मानने के बजाए, उसने यीशु की कही बात के खिलाफ़ काम किया। वह आखिरी इन्सान नहीं था, जिसने ऐसा किया। भीड़ इतनी बड़ी होती जा रही थी, धार्मिक अगुवों से विरोध इतना बढ़ रहा था, कि यीशु वहाँ से निकल जाते हैं। इस समय पर उन्हों ने चाहा कि गड़बड़ी पैदा न हो। (देखें यूहन्ना 7:30)
2:1-12 मत्ती 9:1-8 के नोट्स देखें। मरकुस दिखाता है कि अपाहिज के दोस्तों का विश्वास उन्हें सारी रूकावटों के ऊपर जीत के लिए दृढ़ निश्चयता लाता है। इस बात में वे हमारे लिए उदाहरण हैं। विश्वास की निरन्तरता के बारे में देखें। (मत्ती 7:7-8; लूका 11:5-12; 18:1-8)
2:13-14 देखें मत्ती 9:9 जहाँ लेवी को मत्ती कहा गया। शायद, लेवी उसका वास्तविक नाम था और मत्ती नया, एक प्रेरित के रूप में। इब्रानी के 'प्रभु के वरदान' को ही यूनानी में 'मत्ती' कहा जाता है।

उसे साथ आने के लिए कहा। और लेवी उनके साथ हो लिया।

15जब यीशु उसके घर खाना खाने बैठे तब बहुत से टैक्स लेने वाले और गुनाहगार भी वहाँ हाज़िर थे। तब तक यीशु के साथ हो लेने वालों की संख्या काफ़ी हो चुकी थी। 16यह देखकर कि यीशु टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों के साथ खाना खा रहे हैं, धार्मिक पण्डितों और फ़रीसियों ने यीशु के शिष्यों से कहा, "वह तो टैक्स लेने वालों और पापियों के साथ खाते-पीते हैं।"

17यह सुनकर यीशु ने, उन से कहा, "तन्दुरुस्त लोगों को डॉक्टर की ज़रुरत नहीं पड़ती है, लेकिन बीमारों को पड़ती है। मेरा निमन्त्रण (बुलावा) धर्मी लोगों के लिए नहीं है, लेकिन गुनाहगारों के लिए है।"

18यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसी उपवास करते थे, इसलिए उन्हों ने आकर यीशु से यह कहा, "यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसियों के शिष्य उपवास रखते हैं, लेकिन आपके शिष्य क्यों नहीं रखते?"

19यीशु बोले, "क्या बराती कभी उपवास करेंगे जब कि दूल्हा उनके साथ है? कभी नहीं। 20लेकिन ऐसे दिन आएँगे, जब दूल्हा बरातियों से अलग किया जाएगा, तब वे उपवास करेंगे। 21पुराने पहने हुए कपड़ों पर कोई नये कपड़ों का पैवन्द नहीं लगाता है। ऐसा करने से नया पैवन्द पुराने कपड़ों में से कुछ खींच लेगा, और पहना हुआ पैबन्द लगा कपड़ा और ज़्यादा फट जाएगा। 22ताजे अंगूर के रस को कोई भी पुरानी मश्कों में नहीं रखता है, क्योंकि ऐसे में तो ताज़ा अंगूर का रस मश्कों को फाड़ डालेगा। परिणामस्वरुप अंगूर का रस और मश्कें दोनों ही बर्बाद हो जाएँगी। हमेशा नया रस नयी मश्कों में भरा जाता है।"

23एक सब्त के दिन जब यीशु अपने शिष्यों के साथ खेतों में से हो कर जा रहे थे, शिष्य चलते-चलते खड़ी फ़सल की बालें तोड़ने लगे।

24फ़रीसियों ने कहा, "देखिए, सब्त में जो करना जायज़ नहीं है, ये लोग वही कर रहे हैं।

25यीशु ने उन से कहा, "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ज़रूरत के समय जब दाऊद और उसके साथी भूखे हुए थे, तो उन्हों ने क्या किया था? 26भेंट की रोटी पुरोहित के अलावा किसी और को खाने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अबियातार पुरोहित के समय दाऊद प्रार्थना घर में गया और अपने साथियों के साथ मिलकर वह रोटी खायी?

27यीशु ने कहा, "सब्त इन्सान के लिये बनाया गया था, न कि इन्सान सब्त के लिये। 28क्योंकि मैं सब्त के दिन से भी बढ़कर हूँ।"

3 यीशु जब फिर आराधनालय में गए तो उन्हों ने एक सूखे हाथ वाले इन्सान को देखा।

2फ़रीसी वहाँ यह देखने की फिराक में थे, कि यीशु सब्त के दिन उसे स्वस्थ करते हैं कि नहीं। 3यीशु ने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, "जरा बीच में तो आओ।"

4तब यीशु ने फ़रीसियों से पूछा, "सब्त के दिन क्या करना सही है-बुरा या भला, किसी को बचाना या मारना?" लेकिन सभी खामोश रहे।

2:15-17 मत्ती 9:10-13.

2:18-22 मत्ती 9:14-17.

2:27 "सब्त"- (निर्ग. 20:3-11) यह दिन इस लिए दिया गया कि इन्सान के पास एक खास दिन हो आराम के लिए। और इसलिए भी की प्रभु की आराधना करे। यीशु के समय के बहुत से धार्मिक अगुवों ने नियम बनाए जो लोगों की ज़रूरतों से ज़्यादा ज़रूरी थे। यीशु ने ज़ोर डाला कि इन्सान की कीमत 'दिनों' और 'विधियों' से बढ़कर है। (तुलना करें कुल. 2:16)

3:1-6 मत्ती 12:9-14.

5यीशु ने उनके मन की कठोरता से उदास
होकर, बड़े गुस्से से उनकी तरफ़ देखा और
उस व्यक्ति से बोले, "अपना हाथ मेरी
तरफ़ लाओ।" ज्यों ही उसने ऐसा किया,
वह अच्छा हो गया।
6तब फ़रीसी एक दम बाहर जाकर
हेरोदियों के साथ मिलकर सलाह मशविरा
करने लगे, कि यीशु को कैसे मार डालें।
7इसके बाद अपने शिष्यों के साथ यीशु
झील के तरफ़ चल दिए और गलील से
एक बड़ी भीड़ उनके साथ हो ली। 8यह
सुनकर, कि यीशु कैसे अजीब काम करते
हैं, यहूदिया, यरूशलेम, इदूमिया यरदन के
पार से और सूर-सैदा के आस-पास से एक
बड़ी भीड़ उनके पास आयी।
9यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "भीड़
की वजह से एक छोटी नाव मेरे लिये
तैयार रखो, ताकि लोग मुझे दबा न सकें।
10इसलिये कि यीशु ने लोगों की बीमारी
दूर की थी, बीमारी और पीड़ित लोग यीशु
को छूने के लिए गिरे पड़ते थे। 11गंदी
आत्माएँ यीशु को देखकर गिर पड़ती
थीं और चिल्लाकर कहती थीं कि यीशु
परमेश्वर हैं। 12यीशु ने बार-बार लोगों
को सावधान किया कि वे उनके बारे में
ज़्यादा सूचना न दें।
13इसके बाद यीशु पहाड़ पर गए, जहाँ
बुलाने पर वे सब आए जिन्हें वह चाहते थे।
14तब यीशु ने खुशी की खबर (सुसमाचार)
सुनाने के लिए भेजे जाने वाले लोगों को
चुना ताकि वे उनके साथ रहें। 15यह भी कि
उन्हें भूतों को निकालने का अधिकार हो।
16बुलाए हुए इन लोगों के नाम हैं; शमोन,
जिसका नाम उन्हों ने पतरस रखा, 17ज़बदी
का बेटा याकूब, और याकूब का भाई
यूहन्ना जिसका नाम यीशु ने बूअनर्गिस
रखा, जिसका अर्थ है "गर्जन का पुत्र"।
18अन्द्रियास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्मै, मत्ती,
थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, तद्दी,
शमौन कनानी। 19और यहूदा इस्करियोती,
जिस ने यीशु को पकड़वाया था। 20जब
यीशु घर में आए तो इकट्ठी बड़ी भीड़ के
कारण खाना न खा सके। 21जब यीशु के
घर वालों ने यह सुना, तो वे उन्हें पकड़ने
के लिये निकले, क्योंकि उनको लगा कि
यीशु का दिमाग खराब हो गया है।
22यरूशलेम से आए हुए धार्मिक पण्डितों
का यह कहना था कि यीशु में शैतान है

3:5 जो लोगों को इन्सान के बनाए नियमों से कुचलने के लिए राज़ी थे, उन पर यीशु गुस्सा भी हुए और दुखी भी। कौन ऐसा है जो सब्त के दिन मन की सख्ती की वजह से किसी के ठीक होने या बचाए जाने के लिए मना करेगा लेकिन सब्त के दिन किसी को जान से मार डालने के लिए योजना बनाएगा। आज कल भी धार्मिक लोगों के रवैये और कामों को देखकर यीशु मसीह को गुस्सा आता होगा।

3:6 "हेरोदियों"- मत्ती 22:16.

3:8 यहूदिया के दक्षिण पश्चिम में इदूमिया एक क्षेत्र था।

"सूर-सैदा"- मत्ती 11:21.

3:11-12 देखें 1:24-25,34.

3:13-19 मत्ती 10:1-4 के नोट्स देखें.

3:17 "गर्जन"- ऐसा लगता है उनका स्वभाव ऐसा था (लूका 9:54 से तुलना करे)।

3:20 देखें 6:31.

3:21 "घर वालों"- यहाँ पर यूनानी शब्द जिसका इस्तेमाल किया गया है का मतलब है 'जो उनके साथ है' यानि कि जो उनके हैं। इसका मतलब परिवार और रिश्तेदार भी हो सकता है।

"दिमाग खराब हो गया है"- लूका 10:20 से तुलना करें। परमेश्वर के लिए यीशु की धुन ऐसी थी कि लोगों को मजबूत बनाने के लिए सिखाते और मदद करने के लिए वह इतना आगे बढ़ जाते थे कि दूसरों की तुलना में वे असामान्य दिखते थे। तुलना करें यूहन्ना 2:13-17. इन्हीं कारणों से यीशु मसीह के कुछ अनुयायी हर एक शताब्दी में बेवकूफ़ और पागल समझे गए। (देखे प्रे.काम 26:24)

3:22 यहूदी, धार्मिक अगुवों के पास यीशु की शिक्षाओं और व्यवहार के बारे में कुछ और सफ़ाई थी। वे कहते थे कि यीशु शैतान की आधीनता में हैं।

3:22-29 मत्ती 12:25-32.

और वह भूतों के स्वामी की मदद से उन्हें निकालता है।

23इसलिए यीशु ने उन्हें पास बुलाकर, उदाहरण देकर बताया कि शैतान भूतों को नहीं निकाल सकता है। 24उदाहरण ये थेः अगर किसी देश में एकता खत्म हो जाए तो वह कैसे स्थिर रह सकेगा? 25अगर किसी घर में फूट पड़ जाए तो वह घर कैसे बना रह सकेगा? 26इसलिए शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो बना ही नहीं रह सकेगा, लेकिन उसका अन्त आ पहुँचा है। 27कोई इन्सान किसी के घर में घुसकर उसका सामान नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस ताकतवार को बाँध न ले, तभी वह उसके घर को लूट सकेगा।

28मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि लोगों के सभी अपराध और निन्दा के शब्दों को माफ़ किया जाएगा। 29लेकिन जो कोई पवित्र आत्मा के खिलाफ़ कुछ कहे, वह कभी भी माफ़ नहीं किया जाएगा, लेकिन वह हमेशा के गुनाह (पाप) का मुजरिम ठहरेगा।

30यीशु ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे कहा करते थे कि यीशु में गंदी आत्मा है।

31तब यीशु की माँ और भाईयों ने आकर बाहर ही से बुलाया। 32आस-पास में बैठे लोगों ने यीशु से कहा, "देखिए आपकी माँ जी और भाई ढूँढते-ढूँढते बाहर आ पहुँचे हैं।"

33यीशु ने पूछा, "मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?"

34यीशु ने अपनी दृष्टि अपने आस-पास बैठे लोगों पर दौड़ाते हुए कहा, "देखो, मेरी माँ और भाई यही हैं।" 35इसलिए कि जो व्यक्ति परमेश्वर की बातों के अनुसार करता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।

4 झील के किनारे यीशु मसीह के सिखाते समय एक बड़ी भीड़ आ इकट्ठी हुयी थी। 2इसलिए यीशु को एक नाव पर बैठना पड़ा, जब कि भीड़ झील के किनारे खड़ी रही।

3दृष्टान्त दे कर यीशु सिखाया करते थे, उन में से एक ऐसा थाः एक किसान बीज बोने निकला, 4बोते समय कुछ बीज रास्ते के किनारे गिर गए और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5कुछ बीज पत्थरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ उनको गहरी मिट्टी न मिलने पर भी जल्दी उग आए। 6पर सूरज निकलते ही जड़ न पकड़ने की वजह से वह सूख गए। 7कुछ बीज झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा लिया, इसलिए बीज कुछ भी फल न ला सके। 8लेकिन कुछ बीज अच्छी ज़मीन पर गिरे, वे उगकर फलवन्त हुए। कोई बीज तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।

9तब यीशु ने कहा, जो मेरी बातों को सुनकर उचित कदम उठाए उसके लिए यह फ़ायदेमन्द है।

10यीशु के अकेले हो जाने पर उनके साथियों और उन बारहों ने यीशु से इन दृष्टान्तों के बारे में पूछा।

"भूतों के स्वामी"- मत्ती 10:25 के नोट्स को देखें। हर एक को निर्णय लेना है कि यीशु के बारे में क्या विश्वास करें। क्या यीशु पागल या भूत पीड़ित या धोखेबाज़ थे? अगर ऐसा नहीं तो वह परमेश्वर में से थे और सत्य बोलते थे, और परमेश्वर के काम करते थे। सारे सबूत दिखाते हैं कि वह परमेश्वर से थे।

3:30 पद 22; यूहन्ना 7:20; 8:48,52; 10:20.

3:31-35 मत्ती 12:46-50.

4:1-20 मत्ती 13:1-23 । मरकुस, मत्ती से थोड़े भिन्न शब्द इस्तेमाल करता है, ताकि उसी सच्चाई को सामने लाए। पद 11 में वह "परमेश्वर का राज्य (शासन)" शब्द का इस्तेमाल करता है जब कि मत्ती "स्वर्ग का राज्य"। साफ़ ज़ाहिर है की इन दोनों वाक्यों का प्रायः एक ही मतलब है। इस राज्य पर मत्ती 4:17 के नोट्स देखें। मरकुस कुछ और शब्द जोड़ता है।

11 यीशु ने उन से कहा, तुम लोगों को
परमेश्वर के राज्य के रहस्य की समझ
दी गई है, लेकिन बाहर वालों के लिये
सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। 12 वे देखते
तो रहेंगे लेकिन समझ नहीं पाएँगे, सुनेंगे
लेकिन समझ नहीं सकेंगे इसलिए उनका
मन बदलाव न होने की वजह से उनके
गुनाह माफ़ नहीं हो सकेंगे।

13 फिर यीशु ने उन से कहा, "क्या तुम
इस दृष्टान्त का मतलब नहीं समझे, तो
फिर और दूसरे दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?
14 जो बोने का काम करता है, वह वचन
बोता है। 15 जो रास्ते के किनारे के हैं, ये
वे लोग हैं कि जब उन्हों ने सुना, तो शैतान
तुरन्त आकर जो कुछ सिखाया गया है,
उठा ले जाता है। 16 वैसे ही जो पत्थरीली
ज़मीन पर बोए जाते हैं, ये वे लोग हैं, जो
सिखाई गयी बातों को सुनकर तुरन्त खुशी
से अपना लेते हैं। 17 लेकिन अपने अन्दर
मज़बूत न होने से थोड़े दिनों के लिये रहते
हैं। इसके बाद अपनाई जाने वाली यीशु
की शिक्षा के कारण से जब उन पर दुख
या परेशानी आती है तो वे पीछे हट जाते
हैं। 18 जो झाड़ियों में बोए गए वे ये हैं, जो
खुशी की खबर सुनते हैं, लेकिन 19 दुनिया
की फ़िक्र, दौलत का धोखा और दूसरी
चीज़ों का लालच उन में समाकर परमेश्वर
के संदेश को धर दबोचता है और वह बिना
फले रह जाता है। 20 जो बीज अच्छी जमीन
में बोए गए, ये वे हैं, जो खुशी की खबर
सुनकर अपनाते और उत्पादन भी करते
हैं, कुछ तीस गुणा, कुछ साठ गुणा, और
कुछ सौ गुणा।

21 यीशु ने उन से कहा, 'क्या दीपक को
इसलिये लाया जाता है कि बर्तन के भीतर
या चारपाई के नीचे रखा जाए? 22 क्योंकि
कोई चीज़ छिपी नहीं, जो सामने नहीं
आएगी, न ही ऐसी कोई चीज़ गुप्त में है, जो
प्रगट नहीं होगी। 23 अगर कोई मेरी बातों
पर ध्यान देना, चाहता है तो दे।

24 फिर यीशु ने उन से कहा, "जो कुछ
सुना करते हो, उसके बारे में सावधानी
बरतो। जिस नाप से तुम दूसरों के लिए
नापा करते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए
नापा भी जाएगा और जो अधिक सुनता
है, उस को ज़्यादा दिया जाएगा। 25 क्योंकि
जिस किसी के पास है, उसे और मिलेगा,
जिसके पास नाम मात्र है उससे वह भी ले
लिया जाएगा।"

26 फिर यीशु ने कहा, "परमेश्वर का
राज्य ऐसा ही है, जैसे कोई आदमी ज़मीन
में बीज डाले। 27 रात को सोए, और दिन
को जागे और वह बीज़ कैसे उगे और बढ़े
कि वह न जाने। 28 मिट्टी में छिपी ताकत

4:21-22 मत्ती अध्याय 13 में ये पद नहीं दिखते हैं, लेकिन इसी तरह के शब्द उस पुस्तक में कहीं और पाए जाते हैं। (मत्ती 5:15; 10:26)

4:23 मत्ती 13:9

4:24 मत्ती 7:2

4:25 मत्ती 13:12; 25:29.

4:26-29 यह दृष्टान्त सिर्फ़ मरकुस में है। हर दिन की सच्चाई यह है कि जब अच्छा बीज अच्छी ज़मीन में बोया जाता है, अंकुर निकलता है और पौधा बढ़ता है। चाहे बीज बोने वाला इस प्रक्रिया को न समझे इसका अन्तर नहीं पड़ता। विकास धीरे-धीरे हो सकता है, लेकिन अपने आप होता है। यह परमेश्वर के राज्य के बारे में भी सही है जो किसी के जीवन में कार्यरत है या सारी पृथ्वी पर - शुरुआत से लेकर फ़सल काटे जाने तक। परमेश्वर का वचन जीवित शक्तिशाली बीज है जो लोगों के भीतर बोया जाता है। यही बढ़ता जाता है और फिर फ़सल लाता है। लोग शायद समझ न पाएँ, या देख न सकें या इसे वश मे न कर सकें। (तुलना करें 1 कुरि. 3:6-7; 1 पतर. 1:23-24)

खुशी की खबर देने वालों और बाईबल की शिक्षा देने वालों के लिए यह एक प्रोत्साहन की बात हो सकती है। उन्हें परमेश्वर की बातों और उन के काम में भरोसा रखना चाहिए। लेकिन, यह सच्चाई कि निरन्तर उन्नति है हमें परमेश्वर की बातों को सुनने और हमारी ज़िम्मेदारी से बचा नहीं सकती। (देखें पद 23,24)

ही से कोई बीज़, अंकुर, बाल और फिर बालों में दाने को तैयार करती है। 29दाने पक जाने पर किसान कटनी के लिए हँसिया इस्तेमाल करता है।"

30फिर यीशु बोले, "मैं परमेश्वर के राज्य की बराबरी किससे करूँ और कौन सा उदाहरण देकर उसके बारे में समझाऊँ? 31परमेश्वर का राज्य राई के बीज की तरह है। बोए जाने वाले सभी बीजों में यह सब से छोटा तो है। 32लेकिन उगने के बाद सभी साग सब्ज़ियों में बड़ा हो जाता है। उसकी डालियाँ इतनी बड़ी हो जाती हैं, कि आसमान में उड़ने वाले पक्षी आकर उसकी छाया में बसेरा करते हैं।

33लोगों की समझ के मुताबिक दृष्टान्त दे देकर यीशु उन्हें सिखाया करते थे। 34बिना दृष्टान्त दिए यीशु उन से कुछ भी नहीं कहा करते थे। जब अकेले में केवल शिष्य हुआ करते थे, तब उन दृष्टान्तों का मतलब बताया करते थे।

35उसी शाम को यीशु ने शिष्यों से कहा, "आओ हम सब उस पार चलें!"

36भीड़ को विदा करने के बाद वे सभी यीशु के साथ एक नाव पर सवार हो गए। 37तभी एक तेज आन्धी आने से लहरें नाव पर यहाँ तक टकराने लगीं, कि उस में पानी भरने लगा। 38लेकिन यीशु स्वयं नाव के पिछले हिस्से में गद्दी पर सो रहे थे। यीशु को जगाते हुए उन लोगों ने कहा, "गुरुजी क्या आपको मालूम नहीं कि हम डूबने पर हैं?"

39तुरन्त यीशु ने उठकर आँधी को डाँटते हुए पानी से कहा, "खामोश!" तभी आँधी थम गयी और खामोशी छा गयी। 40यीशु बोल उठे, "तुम डर क्यों गए? क्या अब तक तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?" शिष्य डरे और सहमे आपस में एक दूसरे से कहने लगे, "आखिर यह हैं कौन कि आँधी और पानी भी उनकी बात मानते हैं?"

41घबराहट के कारण उनका पसीना छूटने लगा और बोल उठे, "यह कौन है कि आँधी और पानी भी उनकी बात मानते हैं?

5वे सब झील के उस पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे। 2जैसे ही यीशु नाव पर से उतरे, तुरन्त भूत (दुष्टात्मा) की गिरफ़्त में बँधा एक आदमी यीशु से मिला जो कब्रिस्तान से निकलकर आया था। 3वह कब्रिस्तान में रहा करता था और कोई उसे जंजीरों से बाँध कर रखने में भी कामयाब नहीं हुआ था। 4वह बार-बार बेड़ियों और जंजीरों से बान्धा जाता था, लेकिन उन्हें वह टुकड़े-टुकड़े कर डालता था। वह किसी के काबू में नहीं आता था। 5रात-दिन वह कब्रों और पहाड़ों पर चिल्लाता, और अपने आपको पत्थरों से ज़ख्मी किया करता था।

6,7दूर ही से यीशु को देखकर वह दौड़ कर आया और प्रणाम करने के बाद उँची

4:29 "दाने पक जाने"- मत्ती 3:12; 13:30; प्रका. 14:14-16 से तुलना करें।

4:30-32 मत्ती 13:31-32.

4:33 कुछ बातों को शिष्य समझ नहीं सके। तुलना करें यूहन्ना 16:12. यीशु ने तुलना और उदाहरण इसलिए सामने रखे ताकि अपनी शिक्षा को रोशनीमय करें। यह संभव है कि यीशु ने बहुत सी बातों को कहा, जिन्हें लिखा नहीं गया। तुलना करें यूहन्ना 20:30; 21:25.

4:34 पद 13:20 यीशु द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण का एक उदाहरण है। मत्ती 13:36-43 दूसरा है।

4:35-41 मत्ती 8:23-27.

5:1-20 यह मत्ती 8:28-34 में दी गयी घटना के बारे में विस्तार से है। मत्ती का कहना है कि दो भूत पीड़ित इन्सान थे। मरकुस एक के विषय में बताता है और एक पर ध्यान केन्द्रित करता है और इसलिए दूसरा रह जाता है।

5:2 मत्ती 4:24 में भूत ग्रस्तता पर नोट्स देखें।

5:3-5 भूत किसी इन्सान की क्या हालत कर सकते हैं यह देखने को मिलता है। इस इन्सान का क्रूर व्यवहार और ताकत बहुत से भूतों की वजह से था। (9)

5:6,7 ऐसा लगता है कि भूतों को हमेशा मालूम था कि यीशु कौन हैं - 1:24-34.

आवाज़ से चिल्लाकर बोला, "हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के बेटे, आप से मुझे कुछ लेना देना नहीं। मैं कसम से आपको कहता हूँ, कि मुझे दुख न दें।"

8ऐसा वह इसलिए कह रहा था, क्योंकि यीशु ने उससे कहा था, "भूत इस आदमी में से निकल।"

9यीशु ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" उस आदमी ने कहा, "मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम ढेर सारे हैं।"

10वह आदमी बहुत गिड़गिड़ाया, "हमें इस देश के बाहर न भेजें!" 11वहीं पहाड़ों पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।

12भूतों ने यीशु से गुज़ारिश की, "कि हमें सूअरों के अन्दर भेज दें।"

13यीशु ने वैसा ही किया और भूत निकलकर सूअरों के अन्दर घुस गए, जिसकी वजह से तकरीबन दो हज़ार सूअरों का झुण्ड बहुत तेजी से झील में जा डूब मरा। 14सूअरों के चरवाहे भाग खड़े हुए और गाँवों में खबर दी। खबर सुनते ही लोग देखने के लिए वहाँ आ पहुँचे। 15जिस आदमी में भूतों की सेना थी, उसे कपड़े पहने और पूरे होश-हवास में देखकर, आए हुए लोग डर गए।

16घटना देखने वालों ने भूत पीड़ित व्यक्ति और सूअरों का पूरा हाल बताया। 17उन लोगों ने यीशु से बिनती की, कि वह उनके गाँव की सरहद के बाहर चले जाएँ।

18भूतों से आज़ादी पाया हुआ आदमी यीशु के नाव पर चढ़ते वक्त बिनती करने लगा, कि यीशु उसे अपने साथ रहने दें। 19लेकिन यीशु ने उसकी न सुनते हुए कहा, "अपने घर जाकर अपने लोगों को बताओ कि तुम पर दया करके प्रभु ने तुम्हारे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।" 20दिकापुलिस में जाकर वह लोगों को बताने लगा, कि यीशु ने उसके लिए कितने बड़े काम किए। और लोग सुनकर आश्चर्य से भर गए।

21यीशु के नाव से दूसरी पार जाते ही, एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। 22वहीं झील के किनारे, आराधनालय के प्रधानों मे से याईर नामक एक आदमी आया और यीशु के कदमों पर गिर पड़ा। 23गिड़गिड़ाते हुए उसने यीशु से कहा, "मेरी बेटी मरने पर है। आप आकर उस पर हाथ रखें, ताकि वह ठीक होकर ज़िन्दा रहे।"

24यीशु उसके साथ उसके घर की तरफ़ चल पड़े। भीड़ इतनी ज़बरदस्त थी कि लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। 25एक

5:9 एक सेना में - 3 से 6 हज़ार लोग हुआ करते थे। फिर भी पद 2 और 8 में ऐसा लगता है कि एक ही आत्मा थी। यह शायद इसलिए था क्योंकि एक अगुवा या कमाडिंग ऑफ़ीसर उस व्यक्ति में था। यीशु खासकर उसी को सम्बोधित कर रहे थे।

5:10 लूका 8:31 से तुलना करें.

5:15 उन्हों ने महसूस किया कि यीशु ने बड़ी शक्ति का प्रदर्शन किया था। लेकिन वे समझ न सके कि यीशु कौन हैं और उनका उद्देश्य क्या है - दुख की बात यह है कि उन्हों ने समझना भी नहीं चाहा।

5:19 "लोगों को बताओ"- यीशु के इस निर्देश की तुलना दूसरे निर्देशों से करें (1:44; 3:12) गदरेनी यहूदी नहीं थे। उन्हें मसीह के आने की आशा नहीं थी। यीशु भी शायद ही वहाँ भी जाया करते थे। वहाँ इस बात का खतरा नहीं था कि भीड़ उनकी सेवा को करने से रोक सके। ये शब्द जो यीशु ने उन से कहे, उन सब पर लागू होते हैं, जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में परमेश्वर के काम का अनुभव किया है।

5:20 दिकापुलिस यूनानी शब्द है, जिसका मतलब है - दस शहर। गदरेनियों का क्षेत्र दिकापुलिस का एक हिस्सा था।

5:21 यीशु गलील के झील के पश्चिम भाग की तरफ़ लौटे।

5:22-43 मत्ती 9:18-25 मे संक्षेप में होने वाली घटनाओं का पूरा वर्णन है।

5:25 पद 42

महिला को बारह साल से खून बहने की बीमारी थी। 26डॉक्टरों से उसे बहुत दुख मिला था, क्योंकि उसके अपनी सारी दौलत इलाज में लगा देने के बावजूद फ़ायदा होने के बजाए और बीमार हो गयी थी। 27यीशु की शौहरत सुनकर भीड़ में यीशु के पीछे से आकर उसने यीशु के कपड़ों को छू लिया। 28वह माना करती थी, "अगर मैं यीशु के कपड़ों ही को छू लूँगी तो ठीक हो जाऊँगी।" 29उसी वक्त उसका खून बहना बंद हो गया और उस ने अपनी देह में महसूस किया कि उसे बीमारी से मुक्ति मिल गयी है।

30यह महसूस करते ही कि यीशु की देह से शक्ति निकली है, पीछे मुड़कर यीशु ने कहा, "मेरे कपड़ों को किस ने छुआ है?"

31यीशु के शिष्य बोल उठे, "आप भीड़ के दबाव को देख भी रहे हैं और फिर भी कह रहे हैं कि आपको किसने छुआ है?"

32छूने वाले व्यक्ति को देखने के लिए यीशु ने अपनी नज़र दौड़ायी। 33लेकिन जिस महिला को बीमारी से आज़ादी मिल चुकी थी, डरते और काँपते हुए यीशु के सामने आकर गिर पड़ी और सब कुछ बताया।

34यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तुम्हारे विश्वास के फलस्वरूप तुम स्वस्थ हुयी हो।"

35यीशु उससे बात कर ही रहे थे कि कुछ लोग जो आराधनालय के प्रबन्धक के घर से आए थे, कहने लगे, "तुम्हारी बेटी मर चुकी है, गुरुजी को अब तकलीफ़ क्यों दे रहे हो?"

36जैसे ही यीशु ने लोगों के इन शब्दों को सुना, उन्हों ने आराधनालय के प्रबन्धक से कहा, "डरने की बात नहीं हैं, सिर्फ़ भरोसा रखो।"

37पतरस, याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़कर यीशु ने किसी और को अपने साथ नहीं आने दिया। 38आराधनालय के प्रबन्धक के घर पहुँचने पर यीशु ने वहाँ शोर शराबे के अलावा लोगों को ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए पाया। 39अन्दर आते ही यीशु ने उन से कहा, "यह सब रोना-धोना क्यों मचा रखा है?" बच्ची मरी नहीं है वह तो सो रही है।

40वहाँ इकट्ठे लोग यीशु की इस बात पर हँस पड़े। लेकिन जब यीशु ने सभी को बाहर कर दिया, बच्ची के माता-पिता और अपने साथियों समेत उस जगह पहुँचे जहाँ वह लेटी हुयी थी। 41बच्ची का हाथ पकड़ते हुए यीशु ने उसे उठ जाने को कहा।

42तुरन्त वह बेटी उठी और चलने फिरने

5:26 उस समय के डॉक्टर और दवाईयाँ उसे ठीक न कर सके। लेकिन उसके विश्वास से जो हुआ वह किसी डॉक्टर और दवाईयों की योग्यता से ज़्यादा था। तुलना करें निर्ग. 15:26; भजन 103:3

5:30 लूका 8:46 जो लोग यीशु पर भरोसा करते हैं, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की शक्ति उन्हें अच्छा कर सकती है। यीशु नहीं चाहते थे कि वह महिला अपने विश्वास को प्रगट न करे। यीशु सब के सामने उसकी बड़ाई करना चाहते थे और आशीर्वाद की घोषणा करना चाहते थे। (34)

5:34 मत्ती 9:22 यीशु के आने की वजह थी लोगों के मन में शान्ति लाना। (लूका 2:14; यूहन्ना 14:1,27; 20:19)

5:35 ये लोग अपनी आशा को छोड़ना चाहते थे और चाहते थे कि याईर भी नाउम्मीद हो जाए। वे यह नहीं जानते थे कि मौत पर, भी यीशु को अधिकार था। जिस तरह से बीमार को अच्छा करना यीशु के लिए संभव था उसी तरह मरे को ज़िन्दा करना भी।

5:36 विश्वासियों के लिए ये शब्द हैं - जिन्हें वे अपने जीवन भर याद रख सकते हैं। अगर डर का मुकाबला नहीं किया जाता है तो यह हमारे विश्वास को बर्बाद कर सकता है। अगर हम विश्वास में बने रहें तो यह हमारे डर को दूर करता है।

5:39-40 मत्ती 9:24.

5:41 यीशु अरामी भाषा बोलते थे। अरामी उस समय बोली जाने वाली इब्रानी भाषा की तरह थी।

लगी। वहाँ मौजूद सभी लोग आश्चर्य से भर गए। 43यीशु ने उन्हें सख्ती से कहा, "कि इस घटना के बारे में कोई न जानने पाए। यह भी कि इस लड़की को खाने के लिए कुछ दिया जाए।"

6 यीशु वहाँ से निकलकर अपने देश में आए, और उनके शिष्य उनके साथ-साथ थे। 2सब्त के दिन यीशु उनके आराधनालय में उन्हें सिखाने लगे। उन्हें सुनकर लोग आश्चर्य से भर गए और आपस में कहने लगे, "यह ज्ञान इस व्यक्ति को कहाँ से मिल गया? 3यह भी कि यह कैसा ज्ञान है कि उनके द्वारा महान काम होते हैं? क्या यह बढ़ई नहीं है, जो मरियम का बेटा, याकूब, योसेस, यहूदा और शिमोन का भाई है? क्या इसकी बहनें हमारे साथ नहीं हैं?" इस तरह से लोगों के मन में शिकायत थी।

4लेकिन यीशु उन से बोले, "एक नबी अपने जन्म स्थान, अपने घर और अपने रिश्तेदारों में बेइज़्ज़त होता है।"

5कुछ बीमारों पर हाथ रखने और उन्हें ठीक करने के अलावा यीशु कोई बड़ा काम वहाँ न कर सके। 6उनके अविश्वास पर यीशु को शक तो हुआ लेकिन वह एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर लोगों को सिखाते गए।

7यीशु बारहों को बुलाकर दो-दो करके भेजते गए और भूत प्रेत के ऊपर अधिकार दिया। 8सफ़र में जाते समय उन्हों ने एक लाठी के अलावा जैसे झोला, रोटी और पैसा आदि लेने को मना किया। 9यीशु ने चप्पल पहनने के लिए कहा लेकिन एक से ज़्यादा कमीज़ लेने को मना किया।

10यीशु ने उन से कहा, जब कभी तुम किसी घर में दाखिल हो, जगह छोड़ने से पहले वहीं रहो। 11जो कोई तुम्हें न अपनाए या तुम्हारी न सुने जब तुम वह जगह छोड़ो, उनके खिलाफ़ एक सबूत के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ डालो। मैं तुम से सच कहता हूँ कि इन्साफ़ के दिन इस शहर से ज़्यादा सहनीय सदोम और अमोरा की हालत होगी।

12वहाँ से जाने के बाद वह यह घोषणा करने लगे कि सब को मन बदलने की ज़रूरत है। 13उन्हों ने बहुत से भूतों को निकाला और बीमार लोगों पर तेल लगा कर ठीक कर दिया।

14हेरोदेस राजा ने यीशु के बारे में सुन रखा था, क्योंकि यीशु मशहूर हो चुके थे। उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जी उठा है इसलिए वह आश्चर्य के काम कर रहा है।"

15दूसरों ने कहा, "यह एलिय्याह है" और दूसरों ने यह कि यह पुराने समय के भविष्यद्वक्ता की तरह ही है।"

16हेरोदेस ने यह सुन कर कहा, "हो न हो, यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ही है जिसका मैंने सिर कटवाया था। वह मुर्दों में से जी उठा है।"

17इसलिए कि खुद हेरोदेस ने आदमियों को भेज कर उसे जेल में जंजीर से बँधवा

5:43 देखें 1:44; 7:36; मत्ती 8:4.

6:1-5 मत्ती 13:54-58. यीशु नासरत के निवासी थे।

6:5 जो कुछ भला यीशु मसीह करना चाहते हैं, इन्सान का अविश्वास उन सब को नाश कर देता है। कमी यीशु में नहीं, लोगों में है। परमेश्वर ने विश्वास के तरीके को इस लिए बनाया है ताकि खास आशीर्वाद इन्सान पा सके। (4:23; मत्ती 9:22-29; 21:21-22; यूहन्ना 11:40) भजन 78:41 के नोट्स देखें।

6:6 "शक"- मत्ती 8:10 से तुलना करें।

6:7-11 मत्ती 10:1,9-14.

6:12 देखें कि मनबदलाव का सिद्धान्त - उनके संदेश का खास भाग था। मत्ती 3:2; 4:17 के नोट्स देखिए।

6:13 याकूब 5:14.

6:14 मत्ती 14:1-12.

6:15 'एलिय्याह' - मला. 4:5; मत्ती 11:14; 17:10; यूहन्ना 1:19-23.

दिया था, क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फ़िलिप्पुस की पत्नी को ब्याह लिया था।
18यूहन्ना ने हेरोदेस को कहा था, "अपने
भाई की बीवी को रखना गैरकानूनी है।"
19इसलिये हेरोदियास उससे नफ़रत
करती थी और जान से मारना चाहती थी,
लेकिन ऐसा न कर सकी थी। 20इसलिए
कि यूहन्ना ईमानदार और खरा इन्सान
था, हेरोदेस ने डर की वजह से उसे बचा
रखा। हालाँकि हेरोदेस बड़ी खुशी से यूहन्ना
की सुना करता था, लेकिन उसमें बड़ी
घबराहट भी थी।
21एक समय आया, जब अपने जन्म दिन
के अवसर पर शाही खानदान के लोगों,
फ़ौजी अफ़सरों और गलील के माननीय
सदस्यों को, हेरोदेस ने दावत पर बुलाया।
22जब हेरोदियास की बेटी ने आकर नाचा
और हेरोदेस तथा आए हुए मेहमानों को
खुश कर दिया, राजा ने लड़की से कहा,
"तुम जो कुछ भी माँगोगी, मैं तुम्हें दूँगा।"
23उसने कसम खाते हुए कहा, "तुम मुझ
से जो कुछ माँगोगी, मैं दूँगा, यहाँ तक कि
आधा राज्य तक।"
24बाहर जाकर लड़की अपनी माँ से
बोली, "मैं क्या माँगूं?", माँ ने कहा, "यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले का सिर।"
25तुरन्त लड़की भाग कर राजा के पास
गयी और बोली, "मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने
वाले का सिर थाली में चाहिए।"
26तब राजा को बहुत दुख हुआ, लेकिन
क्योंकि वह वचन दे चुका था और बैठे
लोगों को भी सब मालूम था, वह अपनी
कही बात से मुकर न सका। 27उसी वक्त
राजा ने सिपाही को हुकुम दिया कि उसका
सिर लाया जाए। जेल में जाकर सिपाहियों
ने उसका सिर काटा और थाली में रख,
आकर लड़की को दे दिया। उस लड़की ने
सिर अपनी माँ को दे दिया। 28जब उसके
शिष्यों ने यह सब सुना तो आए, उसकी
लाश उठायी और कब्र में रख दिया।
29प्रेरित यीशु के चारों तरफ़ इकट्ठे हुए
और सब कुछ बता दिया, वह सब जो उन्हों
ने किया था और जो कुछ सिखलाया था।
30लोगों का आना जाना लगा हुआ था,
और उनके पास खाने का समय नहीं था।
31यीशु ने उन से कहा, "सुनसान जगह
जाकर थोड़ा आराम कर लो।"
32और वे सभी एक नाव पर बैठ कर
वीरान जगह चले गए। 33लोगों ने उन सभी
को रवाना होते (जाते) हुए देखा था। बहुतों
ने यीशु को पहचान लिया और आस पास
के इलाकों से पैदल ही निकल पड़े। वे
यीशु से पहले वहाँ पहुँचे और इकट्ठे हो
गए। 34नाव से उतरते ही यीशु ने एक बड़ी
भीड़ को देखा। यीशु उन्हें देखकर तरस
से भर गए क्योंकि वे ऐसी भेड़ों की तरह
थे, जिनका कोई चरवाहा नहीं था। यीशु
उन्हें सिखाने लगे।
35जब दिन ढल चुका यीशु के शिष्य
उनके पास आकर कहने लगे, "यह सुनसान
जगह है और बहुत देर हो चुकी है। 36इन्हें
भेज दीजिए, ताकि आस-पास की बस्ती
और गाँव में जाकर वे अपने लिए रोटी
खरीदें, क्योंकि उनके पास खाने के लिए
कुछ नहीं था।"
37यीशु ने कहा, "तुम ही उन्हें खाने के
लिए कुछ दो।" शिष्यों ने कहा, "क्या हम
बाज़ार जाकर 200 चाँदी के सिक्कों से रोटी
लाकर इन को परोसें?"
38यीशु ने उन से कहा, "तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं? जाओ और देखो",
मालूम करके उन्हों ने बताया, कि एक

6:20 हेरोद एक कमज़ोर आदमी था और नहीं जानता था कि जिस व्यक्ति का वह सम्मान करता था, उसके साथ क्या करें।
6:30 यह 7-13 में वापस देखते हैं
6:30-34 मत्ती 9:36.
6:37 "200 चाँदी के सिक्कों"- यूनानी में 200 दीनार, एक दीनार एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी थी (मत्ती 20:22)।

लड़के के पास केवल पाँच रोटी और दो
मछलियाँ हैं।
39तब यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि सभी
को घास पर झुण्ड में बैठाया जाए। 40वे सौ
और पचास-पचास के झुण्ड में वहाँ बैठ
गए। 41तब पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ
लेकर यीशु ने आसमान की तरफ़ देखते
हुए रोटियों पर आशीर्वाद माँग कर तोड़ते
हुए शिष्यों को दीं कि वे लोगों को बाँट
दें। 42वे सभी खाकर तृप्त हो गए।
43खाने के बाद उन्हों ने बचे हुए टुकड़ों
के बारह टोकरे उठाए और मछली भी।
44रोटी खाने वालों की संख्या लगभग पाँच
हजार पुरूषों की थी।
45तुरन्त यीशु ने अपने शिष्यों को नाव
में बैठाया ताकि वे उस पार बैतसैदा पहले
पहुँच जाएँ, और इसी बीच यीशु ने लोगों
को भी विदा कर दिया। 46उन लोगों को
भेज देने के बाद यीशु पहाड़ पर प्रार्थना
करने चले गए।
47शाम के समय में नाव जब झील के
बीच में थी, सिर्फ़ यीशु ही किनारे पर थे।
48इसलिए कि ज़ोरों की हवा चल रही थी,
यीशु ने उन्हें हवा के विरोध में बहुत संघर्ष
करते हुए देखा। लगभग चार बजे सुबह
यीशु झील पर चलते हुए उनके पास आए।
49लेकिन जब उन्हों ने यीशु को झील पर
चलते हुए देखा तो उन्हें भूत समझकर
चिल्ला पड़े। 50वे सभी यीशु को देखकर
घबरा गए। तुरन्त यीशु बोल उठे, "हिम्मत
रखो, मैं हूँ, डरो मत।"
51उनके साथ यीशु नाव में बैठ गए और
आँधी भी थम गई। अपने मन ही मन वे
बहुत ज़्यादा आश्चर्य से भर गए थे। 52उनके
मन कठोर हो जाने की वजह से उन्हों ने
रोटियों के आश्चर्यकर्म पर ध्यान ही नहीं
दिया था।
53जब वे पार उतर गए तो गन्नेसरत के
तट पर आ गए। 54नाव के बाहर आते
ही लोगों ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया।
55जहाँ-जहाँ वे जाते थे, लोग आस-पास
के इलाकों से अपने बीमारों को चारपाई
पर लिटाकर चले आते थे। 56जहाँ कहीं
यीशु गए, गाँवों, शहर या बस्ती, लोग
अपने बीमारों को बाज़ार में लाकर उन से
बिनती करते थे कि यीशु अपने वस्त्र के
छोर को छूने दें। जितनों ने उन्हें छूआ वे
अच्छे हो गए।

7 तब फ़रीसी और शास्त्री जो यरूशलेम
से आए थे, यीशु के चारों ओर इकट्ठे
हो गए। 2जब उन्हों ने कुछ शिष्यों को
बिना हाथ धोए खाना खाते देखा, तो
नुकताचीनी की। 3इसलिए कि फ़रीसी
और यहूदी, बुज़ुर्गों की प्रथा के अनुसार
जब तक अपने हाथ नहीं धोते थे, खाना
भी नहीं खाते थे। 4बाज़ार से घर वापस
आने पर मी बिना हाथ धोए वे खाना नहीं
खाया करते थे। और भी तमाम रीतियाँ
उनके बीच थीं, जैसे प्याले, बर्तन, काँसे
के बर्तन और मेज़ों को धोना।
5तब फ़रीसियों और शास्त्रियों ने यीशु से
पूछा, "आपके शिष्य बुज़ुर्गों की परम्परा
के मुताबिक नहीं करते, और बिना हाथ
धोए खाना खाते हैं?"
6यीशु ने जवाब में कहा, "कपटियो,
यशायाह ने तुम्हारे बारे में सही भविष्यवाणी
की है।
7'ये लोग सिर्फ़ ओठों से मेरी इज़्ज़त
करते हैं, लेकिन उनका मन मुझ से दूर
रहता है। बेकार, ही में वे मेरी आराधना
करते हैं, मनुष्यों की आज्ञाओं को ईश्वरीय
सिद्धान्त के रूप में पेश करते हैं।'
8परमेश्वर की आज्ञा को ठुकराकर,
तुम लोग इन्सान की अपनायी प्रथा, जैसे
प्यालों और बर्तनों को धोने-धाने का ज़्यादा
ख्याल रखते हो, ऐसी ही और भी बहुत
सी बातें तुम करते हो।"

6:45-56 मत्ती 14:22-36.

7:1-23 मत्ती 15:1-20.

9यीशु ने उन से कहा, "अपनी रीति
विधियों को पूरा करने की होड़ में तुम
परमेश्वर की आज्ञाओं को टाल देते हो।
10क्योंकि मूसा ने कहा है, 'अपने माता-
पिता की इज़्ज़त करना, और हर एक जन
जो अपने माता-पिता का बुरा चाहे, उसे
मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।' 11लेकिन
तुम कहते हो, कि अगर एक आदमी अपने
माता-पिता से कहे, 'मेरा जो कुछ भी है, जो
आप लोगों के काम आ सकता था, कुर्बान
(ईश्वर को अर्पण) हो चुका है, ऐसा कहना
ठीक है। 12इस तरह से तुम उसके माता-
पिता के लिए कुछ करने नहीं देते हो। 13इस
तरह अपनी बनाई गयी प्रथा को मानने के
द्वारा तुम परमेश्वर की आज्ञा को टाल देते
हो, ऐसे ही बहुत से काम तुम करते हो।"

14पूरी भीड़ से यीशु ने कहा, "हर एक जन
जो मेरी बात को सुने वह समझे, 15बाहर
से आदमी के भीतर जाने वाली कोई चीज़
आदमी को अशुद्ध नहीं कर सकती। लेकिन
जो चीज़ें आदमी के भीतर से निकलती हैं,
वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। 16अगर किसी
के पास सुनने के कान हों, तो वह सुने।

17जब यीशु लोगों को छोड़ घर आए,
उनके शिष्यों ने दृष्टान्त के बारे में उन से
पूछा।

18यीशु ने उन लोगों से कहा, "क्या तुम्हारे
पास भी समझ की कमी है? क्या तुम देख
नहीं सकते कि जो कुछ आदमी के अन्दर
बाहर से जाता है, वह उसे अशुद्ध नहीं
करता है। 19इसलिए कि वह सब कुछ
उसके मन में नहीं जाता है, पेट में जाकर
देह से बाहर निकल जाता है।

20यीशु ने कहा, जो कुछ इन्सान के
मन से आता है वह उसे अशुद्ध करता है।
21इसलिए कि इन्सान के अन्दर गन्दे ख्याल,
व्यभिचार, हत्या, 22चोरी, लोभ, दुष्टता,
धोखा, कामुकता, बुरी-नज़र, निन्दा, घमण्ड
और मूर्खता, 23ये सभी बातें मन से निकलती
हैं और इन्सान को अशुद्ध करती हैं"

24वहाँ से उठकर यीशु सूर और सैदा की
सीमा तक पहुँचे, वहीं एक घर के भीतर
गए, लेकिन नहीं चाहते थे कि कोई इस
बात को जाने। लेकिन लोग जान ही गए।
25एक महिला जिसकी बेटी में भूत था,
यीशु के बारे में सुनकर आयी और उनके
पैरों पर गिर पड़ी। 26वह यूनानी और
सूरूफ़िनीकी जाति की थी। उसने बिनती
की कि उसकी बेटी में से भूत निकाल दें।

27लेकिन यीशु ने कहा, "पहिले बच्चों को
तृप्त हो जाने दो। यह उचित नहीं कि बच्चों
की रोटी कुत्तों को दी जाए।"

28महिला ने जवाब में कहा, "हाँ प्रभु,
फिर भी कुत्ते तो मेज़ से गिरे चूरचार को
खाते हैं।"

29यीशु ने कहा, "तुम्हारी इस बात की
वजह से चली जाओ, तुम्हारी बेटी में से
भूत निकल चुका है।"

30घर पहुँचने पर उसने अपनी बेटी
को बिस्तर पर लेटे पाया, जिसमें से भूत
निकल चुका था।

31सूर और सैदा से निकल दिकापुलिस

7:19 "देह से बाहर निकल जाता"- देखें प्रे.काम 10:9-16. पुराने नियम के शुद्ध और अशुद्ध भोजन आत्मिक सच्चाई सिखाते थे। समय आ चुका था कि शाब्दिक अर्थों को छोड़कर आत्मिक शिक्षा (सीख) हासिल की जाए। लैव्य. 11 के नोट्स देखें।

7:24-30 मत्ती 15:21-28 देखें। सीरियन फ़िनीशिया एक पट्टी थी जो थोड़ी सी इस्राएल के उत्तर की तरफ़ भू-मध्यसागर के साथ-साथ थी। इस समय यह सीरिया के आधीन थी। वहाँ के वासियों को कनानी कहा जाता था।

7:29 इस स्त्री का उत्तर यीशु पर विश्वास के आधार पर था। (मत्ती 15:28)

7:31 सैदा एक मशहूर शहर था जो सूर के उत्तर में 40 कि.मी. दूरी पर था। यीशु के उत्तर जाने और दक्षिण पूर्व दिकापुलिस जाने का कारण नहीं दिया गया है। लेकिन यह जानकर कि यीशु क्या हैं, हम समझ सकते हैं कि यह किसी की मदद करने और कुछ लोगों को आशीष देने के लिए था।

"दिकापुलिस"- 5:20.

से होते हुए यीशु फिर गलील की झील तक
पहुँचे। 32लोग यीशु के पास एक बहिरे को
लाए जो ठीक से बात भी नहीं कर सकता
था। उन्हों ने उन से बिनती की कि उस
आदमी को ठीक कर दें। 33वह उसे भीड़
से अलग ले गए और उसके कानों में अपनी
उँगलियाँ डालीं, और थूककर जीभ को छू
लिया। 34ऊपर आसमान की तरफ़ देख कर
यीशु बोले, "इप्फ़त्तह ", अर्थात् खुल जा।
35तुरन्त उसके कान खुल गए और जीभ
के तन्तु ढीले पड़ गए और वह साफ़-साफ़
बोलने लगा। 36यीशु ने उन लोगों को आज्ञा
दी कि वह किसी को न बतलाएँ। लेकिन
जितना यीशु ने मना किया, उतना ही ज़्यादा
उन लोगों ने चर्चा की।

37उनके आश्चर्य की सीमा न रही और
वे कह उठे "यीशु सब कुछ ठीक कर
देते हैं, यहाँ तक कि बहरे सुनने और गूँगे
बोलने लगे हैं।"

8 अब तक भीड़ बढ़ चुकी थी और
उनके खाने के लिए कुछ नहीं था,
तभी यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर
कहा, 2"इसलिए कि लोग मेरे साथ तीन
दिन से हैं और इन के पास खाने के लिए
कुछ नहीं है, मुझे इन पर बड़ी दया आ
रही है। 3अगर मैं इन्हें खाली पेट घर भेज
दूँ, तो ये लोग रास्ते ही में बेहोश होकर
गिर पड़ेंगे, क्योंकि इन में से बहुत लोग
काफ़ी दूर से आए हैं।"

4यीशु के शिष्य बोले, "इस छोटी जगह में
इतने सारे लोगों के लिए रोटी का इन्तज़ाम
कैसे किया जा सकता है?"

5यीशु ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी
रोटियाँ है?" वे बोले, "सात"।

6यीशु ने सभी लोगों को ज़मीन पर बैठ
जाने की आज्ञा दी। सात रोटियाँ अपने हाथ
में लेकर, धन्यवाद के साथ तोड़ीं और
शिष्यों ने लोगों को परोस दीं। 7उनके पास
कुछ छोटी मछलियाँ भी थीं, जिन्हें यीशु ने
लोगों में बाँटने के लिए आज्ञा दी। 8वे लोग
खाना खाकर तृप्त हो गए। और उन्हों ने
बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भर लीं।
9उस दिन करीब चार हज़ार लोगों ने खाना
खाया। फिर यीशु ने उन्हें घर भेज दिया।

10इसके तुरन्त बाद यीशु अपने शिष्यों के
साथ नाव पर बैठ कर दलमनूता इलाके की
तरफ़ रवाना हुए। 11फ़रीसी आकर सवाल
करने लगे और परखने के लिए स्वर्ग से
किसी चिन्ह की माँग की। 12बड़ी गहरी
साँस लेते हुए यीशु बोले, "इस ज़माने के
लोग चिन्ह की तलाश में क्यों रहते हैं? मैं
तुम से सच कहता हूँ, इस ज़माने के लोगों
को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।"

13उन को छोड़कर फिर यीशु नाव पर
बैठकर उस पार चले गए। 14शिष्य अपने
साथ रोटी लेना भूल गए थे। उनके पास
नाव में एक से ज़्यादा रोटी नहीं थीं। 15उन्हें
चेतावनी देते हुए यीशु ने कहा, "फ़रीसियों
के ख़मीर और हेरोदेस के ख़मीर से
सावधान रहना"।

16उन्हों ने आपस में वादविवाद करते
हुए कहा, "हमारे पास तो रोटी नहीं हैं।"

17यह जान लेने से यीशु ने उन से कहा,
"तुम लोग इस बात पर चर्चा क्यों कर रहे
हो कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम
अब तक समझ नहीं रहे हो? क्या तुम्हारा
मन अभी भी कठोर है? 18तुम्हारे आँखें हैं,
क्या तुम देख नहीं सकते हो? और तुम्हारे
पास कान हैं, क्या सुन नहीं पाते हो? क्या
तुम्हें याद नहीं है? 19मैंने जब पाँच हज़ार
के लिए पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तुम ने टुकड़ों

7:33 8:33; और यूहन्ना 9:6 देखें.
7:34 लोगों की पीड़ा से यीशु को दुख होता था (मत्ती 8:19; यशा. 63:9)। तुलना करें। (रोमि. 8:26)। इफ़त्तह शब्द अरामी भाषा का है। (5:41)
7:36देखे 1:44; 5:43; मत्ती 8:4
8:1-10 मत्ती 15:32-39.
8:10 मगदन (मत्ती 15:39) इस क्षेत्र में था।
8:11-21 मत्ती 16:1-12.

के कितने टोकरे उठाए थे? उन्हों ने कहा,
"बारह"। 20और जब मैंने चार हज़ार के
लिए सात रोटियाँ तोड़ी थी, तब तुम ने
रोटियों के टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए
थे? वे बोले, "सात"।
21यीशु ने उन से कहा, "क्या बात है कि
तुम कुछ भी नहीं समझते हो।"
22जब यीशु बैतसैदा पहुँचे, एक अन्धे
व्यक्ति को वे उनके पास लाए ताकि, यीशु
उन्हें छुएँ। 23यीशु उसका हाथ पकड़कर
शहर के बाहर ले गए। उसकी आँखों में
थूका और हाथ रखने के बाद पूछा कि उसे
कुछ दिख रहा है या नहीं। 24उस आदमी
ने ऊपर देखकर कहा, "मुझे लोग चलते
हुए दिख रहे हैं, लेकिन जैसे कि पेड़ चल
रहे हों।"
25जब यीशु ने दोबारा उसकी आँखों में
हाथ रखकर ऊपर देखने को कहा, तो वह
साफ़-साफ़ देखने लगा। 26यीशु ने उसे घर
वापस लौट जाने के साथ-साथ यह कहा
कि वह न तो शहर को जाए और न ही
वहाँ किसी व्यक्ति को बताए।
27यीशु और उनके शिष्य जब कैसरिया
फ़िलिप्पी नगर को जा रहे थे, रास्ते में
शिष्यों से उन्हों ने एक प्रश्न किया, "मेरे
बारे में लोगों के क्या ख्याल हैं?"
28उन्हों ने उत्तर में कहा, कुछ कहते हैं
कि आप यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले हैं,
कुछ एलिय्याह और दूसरे भविष्यद्वक्ताओं
में से एक।
29यीशु बोले, "तुम मुझे क्या कहते हो?"
पतरस ने कहा, "आप मसीह हैं।"
30यीशु ने उन्हें यह किसी और को बताने
के लिए मना किया।
31यीशु उन्हें सिखाने लगे कि मनुष्य का
पुत्र (मैं खुद) सताए जाने के साथ, बुज़ुर्गों,
प्रधान पुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा मार
डाला जाएगा, लेकिन तीसरे दिन जी उठेगा।
32यह बात यीशु खुल्लम-खुल्ला कहा करते
थे। यह सुन पतरस यीशु को अलग ले
जाकर डाँटने-डपटने लगा।
33यीशु ने मुड़कर अपने शिष्यों को देखते
हुए पतरस को डाँटते हुए कहा, "दूर हटो,
शैतान! तुम परमेश्वर की नहीं लेकिन
इन्सानों की बात पर मन लगा रहे हो।
34यीशु ने अपने शिष्यों के साथ लोगों को
भी बुलाया उन से कहा, "जो मुझे अपनाना
चाहता है, उसे चाहिए कि अपनी खुदी का
इन्कार करे, अपनी सूली उठाए और मेरी
सुनकर जीना शुरु कर दे। 35इसलिए कि
जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता
है, वह इसे खो देगा, लेकिन जो मेरे और
मेरे सुसमाचार के लिए अपना जीवन बिता
देना चाहता है, वह इसे बचाएगा। 36क्योंकि
एक इन्सान यदि सारी दुनिया को हासिल
करे लेकिन अपनी आत्मा को खो दे, तो
क्या फ़ायदा? 37इन्सान अपनी आत्मा के
बदले में क्या देगा? 38इसलिए जो कोई
इस व्यभिचारी और दुष्ट पीढ़ी से मुझ से
शर्माएगा, मनुष्य का पुत्र जब अपने पिता

8:22 बेतसैदा गलील की झील के उत्तर में एक शहर है।

8:24-25 शुरू में तो वह व्यक्ति साफ़ नहीं देख रहा था। यह एक दी गयी घटना है जिसमें यीशु ने रूक-रूक कर स्वस्थ किया। इसकी वजह नहीं दी गयी है। शायद शुरू में व्यक्ति का विश्वास कमज़ोर था और धीरे-धीरे बढ़ता गया। शायद यीशु चाहते थे कि स्वास्थ्य पाने वाले जब इसे पढ़ेंगे या सुनेंगे तो हिम्मत पाएँगे कि यीशु लोगों को धीरे-धीरे ठीक कर सकते हैं। आत्मिक जीवन में भी लोगों को कभी-कभी धीरे-धीरे आत्मिक रोशनी मिलती है।

8:24 मनुष्य की लार में चँगाई की शक्ति नहीं है कि अन्धेपन को दूर करे। न ही ज़रूरी था कि स्वस्थ करने के लिए छूआ जाए। मत्ती 8:8,13. शायद ऐसे कार्य से (7:33) यीशु विश्वास को प्रोत्साहन दे रहे थे।

8:27-38 मत्ती 16:13-27.

8:38 मत्ती 10:32-33 से तुलना करें, रोमि. 1:16. घमण्ड या इन्सान का डर या दूसरों से स्वीकृति हासिल करने की प्रवृति लोगों को मसीह और उद्धार के समाचार से शर्मिन्दा करती है।

की महिमा और पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, उससे शर्माएगा।"

9 यीशु ने उन लोगों से कहा, "मैं सच कहता हूँ कि, जो यहाँ खड़े हैं, उन में से कुछ मौत को तब तक नहीं चखेंगे जब तक कि वे परमेश्वर के राज्य को शक्ति के साथ आते हुए देख न लेंगे।"

2छः दिन के बाद यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना को एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। वहाँ उनके देखते-देखते उनका रूप बदल गया। 3उनके कपड़े बर्फ़ की तरह सफ़ेद इतने चमकने लगे जितना पृथ्वी पर कोई भी धोबी सफ़ेदी नहीं ला सकता था। 4वहीं एलिय्याह और मूसा भी प्रगट हुए और वे यीशु से बातें कर रहे थे।

5पतरस तुरन्त बोल उठा, "गुरु जी हमारे लिए यहाँ रहना अच्छा है। हम तीन मण्डप बनाएँगे, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिये। 6वे सभी इतना डर गए थे कि पतरस बौखला कर कुछ भी बोल बैठा।

7एक बादल ने आकर छाया से उन्हें ढँक लिया। बादल ही में से एक आवाज़ आयी कि, "यह मेरा प्यारा बेटा है, इसी की सुनो।"

8अचानक जब उन्हों ने चारों तरफ़ देखा तो वहाँ कोई नहीं था, सिर्फ़ वे और यीशु।

9जैसे ही वे पहाड़ से नीचे उतरे यीशु ने उस अनुभव को दूसरों से बताने की तब तक मनाही की, जब तक कि वह मरे हुओं में से जी न उठें। 10जी उठना क्या है, इस पर वाद-विवाद तो उन्हों ने किया, लेकिन इस विषय पर चुप्पी साध ली।

11उन लोगों (शिष्यों) ने पूछा, "शास्त्री यह क्यों कहते हैं, कि पहले एलिय्याह आएगा?"

12यीशु ने उत्तर दिया, "यह तो सच है कि एलिय्याह पहले आकर सब कुछ सुधारेगा। लेकिन मनुष्य के पुत्र के लिए यह लिखा है कि वह बहुत दुख उठाएगा और बेइज़्ज़त किया जाएगा।" 13लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि एलिय्याह आ चुका है और उन्हों ने उसके साथ वह सब किया जैसा उन्हों ने चाहा और जैसा उसके बारे में लिखा भी है।

14जब यीशु शिष्यों के पास आए उन्हों ने अपने चारों तरफ़ एक बड़ी भीड़ देखी और शास्त्रियों ने यीशु से सवाल जवाब किए। 15यीशु को देखते ही लोगों को आश्चर्य हुआ और दौड़े आए, और प्रणाम किया।

16यीशु ने शास्त्रियों से पूछा, "तुम उन से क्या पूछ रहे हो?"

17भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, गुरुजी मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था। उसके अन्दर एक गूँगी आत्मा है। 18जब

9:1 मत्ती 16:18.

9:2 मत्ती 17:1-13.

9:6 लूका 9:33 जब हमें मालूम नहीं कि क्या कहें, तो अच्छा है कुछ न कहें। फिर भी पतरस के बेवकूफ़ी के शब्द से हम सीखते हैं कि शिष्यों ने मूसा और एलिय्याह को पहचाना (जब कि दोनों कई शताब्दियों पहले मर चुके थे।)

9:12 प्रभु उनका ध्यान पुराने नियम की तरफ़ खींचते हैं। यशा. 53 और भजन 22 को देखें।

9:14-32 यह मत्ती 17:14-23 का बड़ा ब्यौरा है। मत्ती इस तर्क को नहीं देता है। इसलिए कि ये शिष्य दुष्टात्मा ग्रस्त लड़के को चंगाई नहीं दे सके थे इसलिए शायद वाद-विवाद का विषय वही था। यीशु में स्वस्थ करने की सामर्थ थी। (तुलना 3:20)

9:15 "आश्चर्य"- शायद वे यीशु के प्रगट होने के बारे में अचम्भित थे।

9:16 यीशु मसीह तर्क के कारण के बारे में अनजान नहीं थे। (मत्ती 9:4; यूहन्ना 1:47-49; 12:24-25; 21:17) लेकिन लड़के के पिता को बोलने के लिए हिम्मत दिला रहे थे।

9:17-18 यहाँ देखिए भूत गंदी आत्मा ग्रस्तता के लक्षणों को। देखें पद 20,22,26

कभी वह उस पर सवार होती है, उसे पटक देती है। उसके मुँह में फ़ेन भर आता है और वह अपने दाँत पीसता है। वह दिन ब दिन कमज़ोर होता जा रहा है, मैंने आपके शिष्यों से बिनती की थी लेकिन वे उसे निकाल नहीं पाए।"

19यीशु बोल उठे, "हे अविश्वासी पीढ़ी मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा, कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।

20वे उसे यीशु के पास लाए। जब उस गंदी आत्मा ने उसे देखा, तुरन्त लड़के को दौरा पड़ा और वह ज़मीन पर गिर गया और मुँह में फ़ेन लाते हुए लोटने लगा।

21यीशु ने उसके पिता से पूछा, "इसकी हालत ऐसी कब से है? वह बोला, बचपन से।" 22अक्सर इस ने उसे पानी तथा आग में ढकेलकर मार डालने की कोशिश की है। यदि आप कुछ कर सकते हैं, "तो हम पर दया कीजिए।"

23यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं कर सकता हूँ, यह क्या बात है! अगर तुम विश्वास करो तो सब कुछ हो सकता है।"

24तुरन्त बच्चे के पिता ने उत्तर दिया, "प्रभु मुझे भरोसा है, मेरे शक को दूर करें।"

25जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़े चले आ रहे हैं, तब गंदी आत्मा को डाँटते हुए कहा, "हे गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, निकल आ, और फिर कभी प्रवेश न करना"।

26वह आत्मा चिल्लायी और भयंकर दौरे के साथ उसे पटक कर उसमें से निकल गयी। वह मानो मरा सा रह गया, तथा बहुतों ने कहा, "वह मर गया है"। 27लेकिन यीशु ने उसे अपने हाथ से पकड़ कर उसके पैरों पर उसे खड़ा किया, तो वह खड़ा हो गया।

28घर आने पर शिष्यों ने अकेले में उन से पूछा, "हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?"

29यीशु ने कहा, "इस तरह की आत्मा बिना प्रार्थना और उपवास बाहर नहीं निकलती है।"

30वहाँ से निकल कर वे गलील से होकर गुज़रे। यीशु ने नहीं चाहा कि वहाँ कोई यह बात जाने। 31लोगों को सिखाते हुए यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र लोगों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे। उसके मारे जाने के बाद, वह तीसरे दिन जी उठेगा।

32वे लोग यह बात समझ न सके और पूछने के लिए डरते भी थे।

33फिर यीशु कफ़रनहूम पहुँचे, घर में

9:22 व्यक्ति ने यीशु की शक्ति पर शक किया था। शायद उसने सोचा कि शक्ति और अधिकार को कम समझ सकते हैं, सिर्फ़ मसीहियों की कमज़ोरियों को देखकर।

9:23 फिर से हम बाईबल की शिक्षा देखते हैं कि विश्वास परमेश्वर के लिए काम करने का रास्ता तैयार करता है। शक से प्रभु का काम रूकता है (6:5)। विश्वास की वज़ह से प्रभु की शक्ति बढ़ती है।

9:24 व्यक्ति अपने विश्वास की कमज़ोरी पहचानता है इसके लिए वह पुकार भी उठता है (पद 21)। यीशु ने उसकी दोनों प्रार्थनाओं का जवाब दिया। क्या सभी विश्वासियों के सामने यह संघर्ष नहीं है। मदद उन्हीं से मिलेगी जिन्होंने उसकी मदद की। इब्रा. 12:2

9:25 यह भूत एक गंदी आत्मा थी, जिसने बच्चे को गूँगा, बहरा बनाया था। यही एक समय है जिसमें हम यीशु को यह आज्ञा देते हुए देखते हैं कि भूत दोबारा व्यक्ति में न घुसे। हालाँकि ऐसा शायद और दूसरे समयों मे भी यीशु ने किया होगा। मत्ती 12:43-45 से दिखता है कि गन्दी आत्मा ऐसा कर सकती है।

9:29 ऐसा लगता है कि कुछ आत्माएँ दूसरी आत्माओं से अधिक ज़िद्दी होती हैं और निकलने में समय लेती हैं। मत्ती 12:34-45.

9:30-31 यह शिक्षा सारी दुनिया के लिए नहीं सिर्फ़ शिष्यों के लिए थी। अब यह संदेश का केन्द्र है, जिसे शिष्य दुनिया को देने वाले थे। (लूका 24:45; 1 कुरि. 15:3-4)

9:32 पद 10; 8:31-33 हालाँकि वे शिष्य थे, आत्मिक मामलों में कमज़ोर थे - जैसे की आज भी हैं। पौलुस की अद्‌भुत प्रार्थना को जो इफ़ि. में है देखें 1:17-19.

उन्हों ने पूछा, "तुम आपस में किस बात पर वाद विवाद कर रहे थे?

34लेकिन वे खामोश रहे, इसलिए कि आपस में वे बहस कर रहे थे कि उन में बड़ा कौन है।

35यीशु ने उन बारहों को बुलाकर उन से कहा, यदि कोई व्यक्ति पहला होना चाहे, तो उसे आखिरी और सब का नौकर बनना चाहिए।

36एक बच्चे को सामने लाकर अपनी बाँहों में ले, यीशु ने कहा, 37जो कोई ऐसे एक बच्चे को मेरे नाम से अपनाता है वह मुझे अपनाता है और जो कोई मुझे अपनाता है, वह मुझे नहीं लेकिन मेरे भेजने वाले को अपनाता है।

38यूहन्ना ने उत्तर में कहा, "गुरुजी, हम ने एक व्यक्ति को देखा जो बिना हमारे साथ हुए आपके नाम से भूत निकाल रहा था। इसलिए कि वह हमारे साथ नहीं था हम ने उसे रोकने की कोशिश की।"

39लेकिन यीशु ने कहा, उसे रोको मत, क्योंकि जो व्यक्ति मेरे नाम से आश्चर्यकर्म करता है, जल्दी ही मेरे खिलाफ़ कुछ नहीं कहेगा। 40क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, हमारी तरफ़ है। 41जो कोई मेरे नाम से तुम्हें एक प्याला पानी देता है कि तुम मसीह के हो, मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल नहीं खोएगा। 42जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, एक के लिए रुकावट का कारण बनता है, उसके लिए यह अच्छा होता कि उसके गले में चक्की का पाट बाँधकर गहरे समुद्र में धकेल दिया गया होता।

43यदि तुम्हारा हाथ तुम्हारे पतन (बुराई में गिरने) का कारण बने, उसे काटकर फेंक दो। तुम्हारे लिए यह अच्छा है कि तुम लूले स्वर्ग में जाओ बजाए इसके कि दोनों हाथों के साथ नरक की पीड़ा को भोगो, जो कभी खत्म नहीं होती है। 44जहाँ का कीड़ा मरता नहीं है और पीड़ा (आग) खत्म नहीं होती है। 45यदि तुम्हारा पैर तुम्हारे बुराई में गिर जाने का कारण बने, इसे काटकर फेंक दो। तुम्हारे लिए यह भला है कि तुम लँगड़े जीवन (स्वर्ग) में दाखिल हो, बजाए इसके कि दोनों पैरों के साथ मौत (नरक) हासिल करो। 46जहाँ का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 47यदि तुम्हारी आँख तुम्हें बुराई में फँसाए इसे निकाल कर फेंक दो। तुम्हारे लिए यह अच्छा है कि बिना एक आँख स्वर्ग जाओ, बजाए इसके कि दोनों आँखों के साथ नरक जाओ। 48वहाँ का कीड़ा मरता नहीं है न ही वहाँ की पीड़ा (आग) कभी

9:34 लूका 22:24 देखें यिर्म. 45:5.

9:35 मत्ती 18:4; 20:26-28.

9:37 मत्ती 18:5; 10:40.

9:38 यीशु के शिष्यों में संकीर्णता और अलगावपन का खतरा हमेशा बना रहता है। यह खतरा कि उनका झुण्ड सही है, दूसरे सब गलत हैं। यह रवैया जो दूसरों को अयोग्य और नालायक समझता है, विश्वासी के मन में रहना ही नहीं चाहिए। (तुलना करें गिनती 11:25-29; 1 कुरि. 1:10-13)

9:40 यह मत्ती 10:30 का दूसरा हिस्सा है।

9:41 मत्ती 10:40-42.

9:42-49 मत्ती 18:6-9; 5:29-30.

9:48 यह यशा. 66:24 नरक की तुलना कूड़े के एक ऐसे ढेर से की जा सकती है जहाँ देह को कीड़े खाते हैं और आग जलती रहती है। यरूशलेम की दीवार के बाहर गेहेन्ना घाटी ऐसी ही थी। गेहेन्ना का ही अनुवाद 'नरक' है, नए नियम में बार-बार (मत्ती और मरकुस कई बार लूका और याकूब की पत्री में एक बार)। यीशु ने पापी मनुष्यों के अन्त की भयानक तस्वीर दिखायी। यह भी कि चेतावनी को अनदेखा करना मूर्खता है। देखें मत्ती 5:22; लूका 16:23-24; प्रका. 20:14-15. वे सभी जो इस दुनिया के कचरे को चुनते हैं (फ़िलि. 3:8) और यीशु से मिलने वाले उद्धार को अस्वीकार करते हैं, उसी कचरे के ढेर पर जाएँगे। यह परमेश्वर का सिद्ध न्याय होगा।

इसलिए हर इन्सान को उन पापों और प्रभावों को कितनी तत्परता से अस्वीकार करना चाहिए जो बुराई की तरफ़ ढकेलते हैं।

कम होती है। 49हर एक जन परखा जाएगा
और हर एक की कुर्बानी भी?
50नमक अच्छा है, लेकिन यदि नमक
अपना नमकीनपन खो दे, तो फिर उसे
कैसे नमकीन किया जा सकेगा? अपने
आप में नमक रखो और एक दूसरे के
साथ मेल से रहो।"

10 यीशु उठकर यरदन नदी के उस पार
यहूदिया के इलाके में पहुँचे और
लोग फिर से उनके चारों तरफ़ इकट्ठे हो
गए और यीशु उन्हें शिक्षा देने लगे। 2इतने
में फ़रीसियों ने परखने के लिए यीशु के
पास आकर पूछा, "क्या पुरुष के लिए यह
जायज़ है कि अपनी पत्नी को तलाक दे।"
3यीशु ने पूछा, "मूसा ने क्या आज्ञा दी
थी?"
4फ़रीसियों ने कहा, "कि तलाकनामा पूरा
होने के बाद ही एक व्यक्ति तलाक करे।"
5यीशु ने जवाब में कहा, तुम्हारे मन की
सख़्ती की वजह से उसने ऐसा कहा था।
6लेकिन शुरुआत से परमेश्वर ने इन्सान
को पुरुष और स्त्री के रूप में बनाया है।
7इसी वजह से एक पुरुष अपने, पिता
और माता को छोड़कर पत्नी के साथ
जुड़ेगा। 8दोनों एक देह हो जाएँगे, तब से
वे अलग नहीं लेकिन 'एक देह' कहलाएँगे।
9इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे
इन्सान न तोड़े।
10घर पर इसी विषय पर शिष्यों ने
सवाल किए।
11यीशु ने उन से कहा, "जो आदमी
अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी से विवाह
कर लेता है वह उसके साथ व्यभिचार
करता है।" 12यदि पत्नी अपने पति को
छोड़कर दूसरे से विवाह कर लेती है, तो
वह व्यभिचार करती है।
13इसी बीच वे छोटे बच्चों को यीशु के
पास लाए, ताकि यीशु उन्हें छुएँ। लेकिन
आने वालों को शिष्यों ने डाँटा।
14यीशु को यह देखकर अच्छा नहीं
लगा और उन्हों ने कहा, "छोटे बच्चों को
मेरे पास आने दो, उन्हें मना मत करो,
क्योंकि परमेश्वर का राज्य बच्चों के समान
मन वालों के लिए ही है। 15मैं तुम से सच
कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज्य को
एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनाता, वह
उसमें दाखिल भी नहीं होगा।
16तब यीशु ने बच्चों को अपनी बाँहों में
लेकर, उन पर हाथ रखकर आशीर्वाद
दिया।
17जब यीशु सड़क पर जा रहे थे, एक
जन दौड़कर आया और यीशु के सामने
घुटने टेक कर कहा, "हे अच्छे गुरु, स्वर्ग
प्राप्ति के लिए मैं क्या करूँ?"
18यीशु उस से बोले, "तुम मुझे अच्छा
क्यों कह रहे हो परमेश्वर को छोड़कर
कोई भी भला नहीं है!" 19आज्ञाएँ तो

9:49 यह मुश्किल है कि इस पद का मतलब और आगे पीछे के पदों से इसका संबन्ध हम पा सकें। नमक और आग यहाँ एक साथ हैं यह दिखाने के लिए कि इन्सान को किन बातों में से होकर जाना है। नमक सड़ने से बचाता है। आग भस्म करती है। यदि यहाँ "हर एक" का मतलब है हर इन्सान, तो पद का मतलब हो सकता है कि मुक्ति न पाए हुए आग का अनुभव नरक में करेंगे और मुक्ति पाए हुए अभी वर्तमान में आग से शुद्ध किए जाएँगे। (भजन 66:12; मला. 3:2; 1 पतर. 1:7)
9:50 मत्ती 5:13; यीशु के प्रति शिष्यता के लिए यहाँ नमक का इस्तेमाल एक उदाहरण के रूप में किया गया है। लूका 14:34 की तुलना इसके सन्दर्भ से करें। सच्चे शिष्य का चिन्ह है शान्ति (तुलना करें मत्ती 5:9)।
10:1-16 देखें मत्ती 19:1-5.
10:1 देखें 2:13; 4:2; 6:6,34; मत्ती 4:23; भजन 24:4-5. यीशु मसीह की खुशी अभी भी यही है कि लोग सच्चाई सीखें।
10:15 मत्ती 18:3
10:17-31 मत्ती 19:16-30 के नोट्स देखें.
10:17 वह बड़े जोश से और भूख प्यास से आया था और वापस दुखी चला गया। (पद 22)

तुम्हें मालूम हैं, व्यभिचार मत करना, खून मत करना, चुराना नहीं, झूठी गवाही न देना, धोखा मत देना और माता-पिता की इज़्ज़त करना।

20उसने यीशु से जवाब में कहा, "गुरूजी! यह सब तो मैं बचपन से करता आया हूँ।" 21यीशु प्रेम से भर गए और उससे कहा, "तुम में एक कमी है। जाओ जो कुछ तुम्हारे पास है, बेच दो और गरीबों में बाँट दो। अपना क्रूस उठाकर मेरी बातें मानकर जीवन जीओ, तब तुम स्वर्ग की दौलत पाओगे।"

22यह सुन वह दुखी हुआ और वैसी ही हालत में घर चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।

23चारों तरफ़ देखकर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, जो लोग अमीर हैं, उनके लिए स्वर्ग में दाखिल होना कितना मुश्किल है।

24शिष्य यीशु के बातों पर आश्चर्य कर रहे थे लेकिन यीशु ने फिर उत्तर में कहा, "बच्चो, जो दौलत पर भरोसा रखते हैं उनके लिए स्वर्ग के राज्य में दाखिल होना कितना मुश्किल है। 25एक ऊँट सुई के छेद में से गुज़र सकता है पर एक अमीर का स्वर्ग में प्रवेश करना कठिन है।

26आपस ही में वे बहुत ज़्यादा आश्चर्य में पड़ कर कहने लगे, "मुक्ति फिर कौन पा सकता है?"

27उनकी तरफ़ देखते हुए यीशु बोले, "इन्सान के लिए यह काम मुश्किल है लेकिन परमेश्वर तो कुछ भी कर सकते हैं।"

28पतरस यीशु से कहने लगा, "देखिए, सब कुछ छोड़ कर हम आपके हो गए हैं।"

29यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं है, जिसने मेरे और मेरी खुशी की खबर सुनाने के कारण घर, भाई बहन, या माँ, या पत्नी, या बच्चे, या ज़मीन जायदाद को छोड़ा हो, 30और सताव के साथ इस दुनिया में सौ गुना-घर, भाई, बहनें, माँ, बच्चे, ज़मीन, जायदाद न पाए। हाँ, भविष्य में सदाकाल का जीवन भी उसका होगा। 31लेकिन बहुत से जो पहले हैं आखिरी होंगे और आखिर वाले पहले।

32वे यरूशलेम की तरफ़ सड़क पर चले जा रहे थे और यीशु उनके आगे थे। वे आश्चर्यचकित थे और उनके पीछे आने वाले डरे हुए थे। यीशु ने बारहों को अलग बुलाया और उन्हें वह सब बताने लगे जो उनके साथ होने वाला था।

33देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं और मैं (मनुष्य का पुत्र) प्रधान पुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ सुपुर्द किया जाऊँगा। वे लोग मुझे फाँसी की सज़ा देंगे और गैर यहूदियों के हाथ में दे देंगे। 34वे मेरा मज़ाक करके कोड़े लगाएँगे, थूकेंगे और मार भी डालेंगे।

10:21 यीशु इस नवजवान के सामने कठोर परीक्षा रखते हैं। ऐसा यीशु ने इसलिए किया, क्योंकि उनका मन उसके लिए प्यार से भर गया था। वह उसकी भलाई सोच रहे थे। हमें यह जानना चाहिए कि, जब कभी यीशु कुछ मुश्किल काम हमसे कहते हैं तो ऐसा इसलिए क्योंकि वह हमसे प्यार करते हैं और हमें वैसा करने की ज़रूरत है।

10:22 यीशु मसीह और अनन्त जीवन से बढ़कर यह व्यक्ति अपने पास जो कुछ था, उस पर भरोसा किए हुए था। परमेश्वर किसी को भी कीमती चीज़ क्यों दें यदि वे उसकी कीमत को नहीं समझते? (तुलना करें नीति. 4:7; लूका 14:33)

10:24 "बच्चो"- अपने शिष्यों को जो बड़े हो चुके थे, यीशु बच्चे कहते हैं, क्योंकि आत्मिक रीति से शिष्य उनके बच्चे ही हैं। देखें (मत्ती 10:42; 10:30 जो यीशु को अपनाकर आगे बढ़ते हैं, उनके जीवन में क्लेश होगा मत्ती 11:19; लूका 11:29; 3:4; 2 तीमु. 3:12) लेकिन उसकी तुलना उस बड़ी शान के जीवन से नहीं की जा सकती है जो भविष्य में हमारे लिए है रोमि. 8:18; 2 कुरि. 4:17.

10:32-45 मत्ती 20:17-28.

10:32 यीशु के जीवन और चेहरे पर ऐसा कुछ था जिससे उनके शिष्यों को अचम्भा लगा।

10:34 तुलना करें लूका 9:51; यशा. 50:7.

35ज़बदी के बेटे याकूब और यूहन्ना बोले,
"गुरुजी, हम चाहते हैं कि हमारी मर्जी के
मुताबिक ही आप हमारे लिए करें"
36यीशु ने पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि
मैं तुम्हारे लिए करूँ?"
37वे बोल उठे, "आप ऐसा होने दें कि
भविष्य के आपके राज्य (शासन काल)
में हम में से एक आपके बायीं और दूसरी
आपके दायीं तरफ़ बैठे।"
38लेकिन यीशु ने कहा, तुम नहीं जानते,
कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला
पी सकोगे, जो मैं पीने जा रहा हूँ? और
मैं जिस पीड़ा में डूबने (बपतिस्मा लेने)
जा रहा हूँ, क्या तुम उसे सह सकते हो?"
39वे बोल उठे, "हाँ बिलकुल सह सकते
हैं।" यीशु ने उन से कहा, "ज़रूर तुम वह
प्याला पीओगे, जो मैं पीने पर हूँ और उस
पीड़ा में डूबोगे जिसमें मैं डूबने जा रहा हूँ।
40यह मेरे हाथ में नहीं है कि किसको अपने
बाएँ या दाएँ बैठाऊँ लेकिन यह जिनके
लिए तैयार किया गया है, उन्हें ही मिलेगा।
41यह बात जब बाकी शिष्यों ने सुनी, तो
वे याकूब और यूहन्ना से बड़े नाराज़ हुए।
42लेकिन यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर
कहा, "तुम्हें यह मालूम है कि गैर यूहदियों
में अधिकारी लोग अपना अधिकार जमाते
हैं और लोगों के ऊपर शासन करते हैं।
43ऐसा तुम्हारे बीच नहीं होना चाहिए। तुम
में से जो कोई दूसरे से बड़ा होना चाहे,
वह पहले दूसरे का सेवक बने। 44तुम में
से जो कोई प्रधान बनना चाहे, वह पहले
सभी का गुलाम (दास) बने। 45यहाँ तक
कि मैं (मनुष्य का पुत्र) सेवा करवाने नहीं
आया लेकिन सेवा करने और बहुतों की
मुक्ति के लिए अपने आपको न्यौछावर
(बलिदान) करने आया हूँ?।
46वे सभी यरीहो आए। जब वह अपने
शिष्यों के साथ यरीहो को छोड़ने वाले थे,
रास्ते में तिमाई का अन्धा बेटा बरतिमाई
सड़क के किनारे बैठा भीख माँग रहा था।
47जब उसे यह मालूम पड़ा कि नासरी
यीशु उसी रास्ते गुजर रहे हैं, तो ज़ोर-ज़ोर
से चिल्लाने लगा, "हे यीशु दाऊद के बेटे,
मुझ पर कृपा कीजिए।"
48बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप हो जाए,
लेकिन वह और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया,
"दाऊद के बेटे, मुझ पर दया करें।"।
49यीशु रुक गए और आज्ञा दी कि उसे
उनके पास लाया जाए। लोगों ने अन्धे
व्यक्ति को बुलाकर कहा, "हिम्मत रखो,
उठ खड़े हो, यीशु तुम्हें बुला रहे हैं।"
50अपने चोगे को एक किनारे फेंक वह
उठा और यीशु के पास आ गया।
51यीशु ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते
हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?" अन्धे आदमी
ने कहा, "गुरुजी, मैं देखना चाहता हूँ।"
52यीशु ने कहा, "जाओ तुम्हारे विश्वास
ने तुम्हें अच्छा कर दिया है।" तुरन्त वह
देखने लगा और यीशु के साथ चल पड़ा।

11 जब वे यरूशलेम के पास बैतफ़गे
और बैतनिय्याह पहुँचे, जैतून
पहाड़ी पर यीशु ने दो शिष्यों को भेजा। 2उन
से कहा, "कि सामने वाले गाँव में जाओ।
जैसे ही तुम वहाँ पहुँचो, तुम एक गदही के
बच्चे को, जिस पर कभी कोई नहीं बैठा है,
बँधा हुआ पाओगे। उसे खोलकर ले आओ।
3यदि कोई तुम से कुछ कहे, "यह तुम क्यों

10:35 उनकी माँ साथ में थी, माँ के साथ मिलकर उन्हों ने यह विनती की। (मत्ती 20:20-21)
10:38 "प्याला"- की तरह यह शब्द 'बपतिस्मे' को एक संकेत की तरह इस्तेमाल किया गया है। यहाँ पानी के बपतिस्मे की बात नहीं की जा रही है। यहाँ पीड़ा और दुखों, में डूबने की बात है। (तुलना करें लूका 12:50)।
10:46-52 मत्ती 20:29-34 मत्ती कहता है की दो अन्धे इस समय ठीक हुए थे। उन में से एक को मरकुस खास जगह देता है। (तुलना करें 5:12)
10:51 इब्रानी शब्द 'रब्बी' का मतलब है मेरे गुरु।
10:52 यहाँ हम विश्वास की ताकत को देखते हैं। (9:23; मत्ती 8:13; 9:22,29)
11:1-11 मत्ती 21:1-9.

कर रहे हो। तो कहना कि प्रभु को इसकी
ज़रूरत है। वह तुरन्त तुम्हें ले जाने देगा।"
4वे लोग वहाँ से निकल पड़े और वहाँ
पहुँचने पर दरवाज़े के पास गदही के बच्चे
को बँधा पाया और उसे खोला। 5वहाँ खड़े
कुछ लोगों ने उन से कहा, "तुम क्यों गदही
के बच्चे को खोल रहे हो? 6जब उन्हों ने
यीशु के आदेश के बारे में बताया, तब उन
लोगों ने गदही को ले जाने दिया।
7उस गदही के बच्चे को यीशु के पास
लाकर उन्हों ने अपने कपड़े उस पर डाले।
8बहुतों ने अपने कपड़े सड़क पर बिछाए।
दूसरों ने पेड़ों की डालियाँ काटीं और सड़क
पर बिछा दीं। 9आगे जाने वाले और पीछे
जाने वाले लोग चिल्लाते गए, "होशाना! धन्य
वह है जो प्रभु के नाम से आता है। 10हमारे
पिता दाऊद का राज्य धन्य है, जो प्रभु के
नाम से आता है। आसमान में होशाना।।"
11यीशु यरूशलेम में प्रार्थना भवन में
आए। उन्हों ने चारों तरफ़ देखा, इसलिए
कि बहुत देर हो चुकी थी, वह शिष्यों के
साथ बैतनिय्याह को चल पड़े। वह बारहों
के साथ बैतनिय्याह पहुँचे।
12अगले दिन बैतनिय्याह से निकलने के
बाद उन्हें भूख लगी। 13अंजीर के पेड़ को
दूर से देखकर, जिसमें पत्तियाँ थीं, यीशु
पास में गए ताकि कुछ मिल जाए। जब
यीशु उसके पास आए तो उसमें पत्तियों
के अलावा कुछ नहीं पाया, क्योंकि वह
अंजीर का समय नहीं था।
14यीशु गुस्से में बोले, "आगे से कोई भी
तुम्हारा फल न खाए।" यीशु के शिष्य यह
सब सुन रहे थे।
15यरूशलेम पहुँचने पर यीशु प्रार्थना भवन
पहुँचकर खरीदने-बेचने वालों को खदेड़ने
लगे। यीशु ने मुद्रा बदलने वालों की मेज़ों
को और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियों
को उलट दिया। 16यीशु ने प्रार्थना भवन
के अहाते में से बर्तन लेकर गुज़रने वालों
पर भी रोक लगानी चाही।
17यीशु ने यह भी पूछा, "क्या यह लिखा
नहीं है, मेरा घर सारे देशों के लिए प्रार्थना
का घर कहलाएगा। लेकिन तुम लोगों ने
इसे चोरों का अड्डा बना डाला है।"
18यह सब सुनकर शास्त्री और प्रधान
पुरोहित यीशु के नाश करने की योजना
बनाने लगे, क्योंकि यीशु की शिक्षा से लोगों
के प्रभावित हो जाने से वे डरने लगे थे।
19शाम के समय यीशु नगर से बाहर जाया
करते थे। 20सुबह के समय जब वे उधर से जा
रहे थे, तब उन्हों ने अंजीर के पेड़ को जड़ से
सूखा पाया। 21पतरस को याद आते ही उसने
कहा, "गुरुजी, देखिए! जिस अंजीर के पेड़
को आप ने शाप दिया था वह सूख गया है।"
22यीशु ने उत्तर में कहा, "परमेश्वर पर
भरोसा रखो।" 23मैं तुम से सच कहता हूँ
कि जो कोई बिना शक किए इस पहाड़ से
कहे, 24"यहाँ से हट कर समुद्र में जा गिरो,
और यह विश्वास करे कि जैसा कहता
है वैसा हो जाएगा। वह मुँह माँगा पाएगा।

11:10 परमेश्वर ने राज्य का वायदा दाऊद और उसके वशंज से किया था। (देखें 2 शमू. 7:11-14; मत्ती 1:1; लूका 1:13,69)

11:11 "बारह"- बारह प्रेरित (3:16-19)

11:12-25 मत्ती 21:12-22.

11:18 ये पुरोहित अपने पद अधिकार इज़्ज़त को चाहते थे। उन्हें डर था कि यीशु सब कुछ बदल देंगे।

11:20 मत्ती यह बात साफ़ बताता है कि पिछले दिन अंजीर का पेड़ कुछ मात्रा में सूख गया था। लेकिन अब पूरा का पूरा सूख गया। - "जड़ से"।

11:24 फिर से यीशु विश्वास की खासियत पर रोशनी डालते हैं (12:5; 5:34; 6:5; 10:52; मत्ती 9:22)। यदि हम सच में मान लें कि प्रभु ने हमारी प्रार्थना का जवाब दिया है तो यह सही है और ऐसा होना चाहिए। ऐसा विश्वास किस तरह संभव है? अपने काम से बात करने के द्वारा नहीं, यह सोचकर कि प्रभु ने सुना है जब कि हम मानते हैं कि उन्हों ने नहीं सुना है। सच्चा विश्वास परमेश्वर के प्रति हमारा रवैया है और हमारे भीतर पवित्र आत्मा के काम का परिणाम (तुलना करें रोमि. 8:26; 1 यूहन्ना 5:14-15; देखे मत्ती 9:22)

25प्रार्थना करते समय अगर तुम्हारे मन
में किसी के लिए कुछ शिकायत है, माफ़
कर दो ताकि तुम्हारे पिता जो स्वर्ग में हैं,
तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करें। 26लेकिन
अगर तुम माफ़ न करो तुम्हारे स्वर्गिक
पिता भी तुम्हें माफ़ नहीं करेंगे।"
27इसके बाद वे यरूशलेम लौट आए।
जब यीशु प्रार्थना भवन में थे, प्रधान,
पुरोहित, शास्त्री और बुज़ुर्ग अगुवे आए
28वे यीशु से बोले, "यह सब आप किस के
अधिकार से कर रहे हैं? यह सभी करने के
लिए आपको अधिकार किस ने दिया है?"
29यीशु ने जवाब में कहा, "मैं भी तुम से
एक सवाल पूछता हूँ, मुझे जवाब दो, तो
मैं भी तुम्हें जवाब दूँगा।" 30यह बताओ
कि यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था या
पृथ्वी से?
31वे आपस में विचार-विमर्श कर रहे थे
कि यदि कहते हैं कि परमेश्वर की तरफ़
से तो यीशु कहेंगे कि हम ने फिर उसकी
क्यों नहीं मानी। 32यदि हम कहेंगे इन्सान
की तरफ़ से तो लोग जो यहून्ना को नबी
मानते थे उनके खिलाफ़ हो जाएँगे।
33उन लोगों ने यीशु से कहा, "हमें नहीं
मालूम।" यीशु ने भी तब कहा, "मैं भी तुम्हें
नहीं बताता कि जो मैं करता हूँ वह किस
के अधिकार से करता हूँ।"

12 यीशु उन लोगों से दृष्टान्तों में बात
करने लगेः एक आदमी ने अंगूर
का एक पौधा लगाया, उसके लिए गड्ढा
खोदा, और एक बुर्ज़ बनाया। इसके बाद
अंगूर के किसानों को किराए पर देकर दूर
देश चला गया। 2फ़सल पकने के समय
उसने एक नौकर को भेजा ताकि किसान
अंगूर की खेती से निकलने वाली फ़सल
का एक हिस्सा उसे दे दें। 3लेकिन किसानों
ने उसे पकड़ा, मारा और वापस खाली
हाथ भेज दिया।
4फिर से उसने एक दूसरे नौकर को उसके
पास भेजा। उन लोगों ने उस पर पत्थर
फेंक कर सिर घायल किया और बेशर्मी से
पेश आकर उसे भी वापस घर भेज दिया।
5उसने एक और नौकर भेजा, उसे भी उन
लोगों ने मार डाला। इस तरह का बर्ताव
किसानों ने बहुतों के साथ किया, पिटाई
की या मार भी डाला।
6अन्त में मालिक ने अपने प्यारे एकलौते
बेटे को उसके पास यह सोच कर भेजा, वे
लोग मेरे बेटे की इज़्ज़त करेंगे।
7पर उन किसानों ने आपस में कहा, 'यही
वारिस है। आओ इसे मार डालें, तब सारी
जायदाद अपनी हो जाएगी।' 8उन्हों ने उसे
पकड़ा, पिटाई की और मार डालने के बाद
बगीचे के बाहर फेंक दिया।
9इसलिये बगीचे का मालिक अब क्या
करेगा? वह आकर किसानों को बर्बाद कर
सारी अंगूर की खेती दूसरों को दे देगा।
10क्या तुम ने पवित्रशास्त्र (बाइबल) का
अध्ययन नहीं किया? 'जिस पत्थर को
राजमिस्त्रियों (बनाने वालों) ने रद्द कर दिया
था, वही मुख्य कोने का सिरा हो गया?
11यह परमेश्वर का काम है और हमारी
निगाहों में अजीब अद्भुत है।
12तब से वे यीशु को पकड़ने की तलाश
में रहने लगे। लेकिन उन्हें लोगों का डर
था। उन्हें मालूम था कि वह दृष्टान्त उन्हीं
के बारे में था और वे यीशु को छोड़कर
चले गए। 13यीशु को बातों में फँसाने के
लिए उन लोगों ने फिर कुछ फ़रीसियों और
हेरोदियों को भेजा।
14आकर इन लोगों ने यीशु से कहा,

11:25 'प्रार्थना करो', इन शब्दों पर ध्यान दें। बाईबल कहीं नहीं कहती कि किसी खास मुद्रा में बैठकर या खड़े होकर प्रार्थना करने में हमारी प्रार्थना सुनी जाएगी (मत्ती 6:14-15 से तुलना करे)।
11:27-33 मत्ती 21:22-27.
12:1-12 मत्ती 21:33-46.
12:13-17 मत्ती 22:15-22.

"गुरुजी, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और कौन क्या सोचता या कहता है इस से आपको कुछ लेना-देना नहीं है। आप किसी के बाहरी रंग-रूप को नहीं देखते, लेकिन स्वर्गिक सच्चाई सिखाते हैं। 15क्या हम कैसर को टैक्स (कर) दें या नहीं?" इन लोगों के कपट को जानकर यीशु ने कहा, "तुम मुझे क्यों परख रहे हो? ज़रा एक सिक्का मुझे दिखाओ।"

16वे सिक्का लाए और यीशु उन से बोले, "इस में किसकी तस्वीर बनी हुयी है?" उन्हों ने कहा, "कैसर की"।

17यीशु ने उत्तर दिया, "जो कैसर का है, वह उसे दो और जो परमेश्वर का है वह उसे।" वे सब इस उत्तर से चकित हुए।

18सदूकियों ने, जो जी उठने में विश्वास नहीं करते हैं, आकर यीशु से कहा, 19"गुरुजी मूसा ने हमें यह आदेश दिया था कि यदि कोई व्यक्ति बिना बच्चे पैदा किए मर जाता है और उसके पीछे, पत्नी रह जाती है, तो उसके भाई को अपनी भाभी से विवाह करके अपने भाई के वंश को बढ़ाना चाहिए। 20सात भाई थे। पहला निःसन्तान मर जाता है, 21अगला भाई पहले की पत्नी से विवाह तो करता है, लेकिन वह भी निःसन्तान मर जाता है। तीसरे के साथ भी ऐसा ही होता है। 22सातों भाई एक ही स्त्री से विवाह करते हैं और उनके कोई बच्चा नहीं होता है। अन्त में वह स्त्री भी मर जाती है। 23इसलिये जब सभी जी उठेंगे उस समय वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? इसलिए कि सातों ने उससे विवाह किया था।"

24यीशु ने जवाब में उन से कहा, "तुम गलती इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम न तो बाइबल (पवित्रशास्त्र) को जानते हो और न ही परमेश्वर की ताकत को। 25इसलिए कि जब लोग मरे हुओं में से जी उठेंगे उन में शादी-ब्याह नहीं होंगी, वे लोग स्वर्ग में स्वर्गदूतों की तरह होंगे। 26यह सच्चाई कि मरे हुए जी उठेंगे, क्या तुम ने मूसा की किताब में नहीं पढ़ी? झाड़ी में रोशनी की घटना में परमेश्वर ने किस तरह बातें की, मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ। 27वह मरे हुओं के नहीं, जीवित लोगों के परमेश्वर हैं। इसलिए तुम बड़े धोखे में पड़े हो।"

28उन में से एक शास्त्री (वकील) ने यह सुनकर और देखकर कि यीशु बड़ी कुशलता से प्रश्नों का उत्तर देते हैं, आकर पूछा, हे गुरु! सब आज्ञाओं में पहली कौन सी है?

29यीशु ने कहा, "सभी आज्ञाओं में से पहली यह है, 'हे इस्राएल सुनो हमारे प्रभु परमेश्वर एक हैं।' 30तुम अपने प्रभु परमेश्वर से दिल, जान, दिमाग और ताकत से प्रेम करना। यही पहली आज्ञा है। 31दूसरी ऐसी है, जैसा तुम अपने से प्रेम रखते हो, अपने पड़ोसी से भी रखना इन दोनों से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।"

32शास्त्री ने कहा, "अच्छे गुरु आप ने सही कहा। एक ही परमेश्वर हैं, उनके अलावा और कोई नहीं हैं। 33अपने दिल, दिमाग, जान और ताकत के साथ उन से प्रेम करना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना सारे होम बलि और कुर्बानियों से बढ़कर है।"

34यीशु ने सही जवाब सुनकर उस से कहा, "तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो।"

35इसके बाद फिर किसी ने यीशु से सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की। प्रार्थना भवन में सिखाते समय यीशु बोले, "शास्त्री

12:15 मत्ती 6:2,5,16; 7:5; 23:13,28; लूका 12:1; 19:15; 1 तीमु. 4:2; 1 पतर. 2:1.
12:18-27 मत्ती 22:23-33.
12:28-37 मत्ती 22:34-46.
12:29 व्यव. 6:4.
"प्रभु" - इसका मतलब है याहवे - यह पुराने नियम में परमेश्वर का नाम है।
12:33 - 1 शमू. 15:22; होशे 6:6; मीका 6:6-8 देखें।
12:34 अंगीकार कर के इस व्यक्ति ने कुछ आत्मिक समझ और दीनता दिखायी और यह ठीक भी था। यह परमेश्वर के राज्य के पास था लेकिन अन्दर नहीं। इसी तरह से हर पीढ़ी में ऐसा होता है। मत्ती 4:17 में परमेश्वर के राज्य पर नोट्स।

क्यों कहते हैं कि यीशु मसीह दाऊद के बेटे हैं? 36इसलिए कि स्वयं दाऊद ने पवित्र आत्मा की मदद से कहा था कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरी दाहिनीं ओर बैठो जब तक मैं तुम्हारे दुश्मनों को धूल न चटा दूँ। 37इसलिए, दाऊद अगर प्रभु कहता है, तो फिर वह उसका बेटा कैसे हुआ? यह सब आम जनता भी सुन रही थी।

38शिक्षा देते समय यीशु ने कहा, "शास्त्रियों से संभल कर रहना। लम्बे-लम्बे चोगे पहने बाज़ार में वे लोगों से नमस्कार सुनना माँगते हैं। 39और त्यौहारों में सब से बढ़िया कमरों और आराधनालय में पहली कुर्सी की ताक में वे रहा करते हैं। 40लेकिन ये लोग लम्बी प्रार्थनाओं का बहाना करके, विधवाओं के घर उजाड़ देते हैं। ये लोग ज़्यादा बड़ी सज़ा पाएँगे।

41यीशु कोषागार के पास ही बैठे हुए थे और दान पेटी में लोगों को दान देते देख रहे थे। बहुत से अमीर लोग पेटी में बड़ी रकम डाल रहे थे। 42एक गरीब विधवा ने आकर दो ताँबे के सिक्के डाले जो एक अधेले के बराबर थे।

43अपने शिष्यों को बुलाकर यीशु बोले, "मैं सच कहता हूँ कि जो लोग दान पेटी में डाल रहे हैं, उन में से सब से ज़्यादा इस गरीब विधवा ने डाला है। 44इसलिए कि सभी ने अपनी बढ़ती में से दिया है, लेकिन इस ने अपनी गरीबी में अपनी सारी ज़िन्दगी की कमाई डाल दी है।"

13 जैसे ही यीशु प्रार्थना भवन के बाहर आए, उनके एक शिष्य ने उन से कहा, "गुरुजी, देखिए यहाँ किस तरह के पत्थर और इमारतें हैं।"

2यीशु बोल उठे, "क्या तुम इन इमारतों की बात कर रहे हो?" यहाँ ऐसा कोई पत्थर नहीं है जो नीचे फेंका नहीं जाएगा।

3जब यीशु जैतून के पहाड़ पर बैठे थे, पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले में उन से पूछा, 4"हमें यह बताइए कि ऐसा कब होगा? और इन बातों के पूरा होने के समय का कौन सा चिन्ह होगा?

5जवाब में यीशु ने उन से कहा, "ध्यान रखना कि तुम्हें कोई धोखा न दे। 6इसलिए कि मेरे नाम से बहुत से लोग आकर मसीह होने का दावा कर लोगों को बहका देंगे। 7जब तुम युद्ध और युद्ध की आवाज़ सुनो, तो घबरा मत जाना क्योंकि इन सब बातों का होना ज़रूरी है। लेकिन यह अन्त का

12:35 "दाऊद के बेटे"- मत्ती 1:1 के नोट्स देखें।

12:36 शब्द "पवित्र आत्मा के द्वारा" पर ध्यान दें (देखें मत्ती 22:43)

12:38-39 मत्ती 23:5-7 से तुलना करें.

12:40 बाहर से वे धर्मी दिखते थे लेकिन भीतर से लालची, निर्दयी और कमज़ोर व असहाय से फ़ायदा उठाने वाले। मत्ती 23:25-28 (अध्याय मत्ती 23:25-28 में धार्मिक ढोंगी लोगों का पर्दाफ़ाश किया गया है।)

12:41 प्रार्थना भवन के बाहरी आँगन में यह कोषागार था।

12:41-44 परमेश्वर को देने के बारे में हम देखते हैं कि एक ज़रूरी बात प्रभु सिखाना चाहते हैं। वह देखते हैं कि हम ने क्या भेंट दी है। (इब्रा. 4:12-13) यीशु उन बहुत देने वालों से प्रभावित नहीं होते हैं जो बहुत ढेर सारा अपने लिए रख लेते हैं। उनकी दृष्टि में छोटी भेंट बड़ी धन राशि से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। यीशु यह देखते हैं कि देने वालों का रवैया (प्रवृत्ति), और बलिदान क्या है। वह यह नहीं देखते हैं कि एक व्यक्ति कितना देता है। लेकिन यह कि कितना अपने लिए रख लेता है। गरीब विश्वासियों की भेंट में प्रभु दिलचस्पी लेते हैं। तुलना करें 2 कुरि. 8:1-5,12. देने के बारे में नोट्स और अनेक पद 2 कुरि. 9:15 में हैं।

12:42 यूनानी भाषा में सिक्का सब से छोटी मुद्रा थी। उसने दोनों डाल दिए, अपने लिए एक भी न रखा।

13:1-37 मत्ती 24:1-51.

13:1-2 यीशु के शिष्य लोगों के कामों की बड़ाई कर सकते हैं और सोच सकते हैं कि उनकी खूबसूरती की वज़ह से वे लोग कीमती हैं। लेकिन आखिर में इन्सान के कामों को तौला जाएगा। देखें यशा. 2:6-22; प्रका. 18:9-24.

समय नहीं होगा। 8एक देश दूसरे देश के
खिलाफ़ और एक राज्य दूसरे राज्य के
खिलाफ़ उठ खड़ा होगा। अलग-अलग
जगहों पर भूकम्प, अकाल और गड़बड़ियाँ
होंगी। यह सब पीड़ा की शुरुआत ही होगी।
9लेकिन तुम लोग सावधान रहना,
क्योंकि वे तुम्हें महासभा को सौंप देंगे और
तुम पंचायतों में पीटे जाओगे। मेरी खातिर
तुम्हें अधिकारियों और राजाओं के सामने
लाया जाएगा, ताकि उनके सामने तुम मेरे
लिए गवाह ठहरो।
10सुसमाचार को सभी देशों में सुनाया
जाना ज़रूरी है।
11लेकिन जब वे तुम्हें ले जाकर सौंप
दें तब पहले से इस बात कि फ़िक्र मत
करना, कि तुम क्या बोलोगे या क्या सोच
कर तैयार रहना है। लेकिन उस समय तुम्हें
जो कुछ दिया जाए, बोलना, क्योंकि बोलने
वाले तुम नहीं लेकिन पवित्र आत्मा है।
12भाई अपने भाई को और पिता अपने
बेटे को मरवा देगा। बच्चे अपने माता-पिता
की खिलाफ़त करेंगे और उन्हें मरवा भी
डालेंगे। 13मेरे नाम के खातिर लोग तुम
से घृणा करेंगे।
14लेकिन जो अन्त तक सहेगा, वही
बचेगा। लेकिन जब तुम उस उजाड़ने
वाली वस्तु, जिसके बारे में दानिय्येल
नबी ने बताया था, वहाँ खड़ी देखो जहाँ
इसे नहीं होना चाहिए, तब यहूदिया के
लोगों को भागकर पहाड़ों पर चला जाना
चाहिए। 15जो लोग घर की छत पर हों
उन्हें न ही नीचे उतरना चाहिए और न
घर में से कुछ लेने के लिए भीतर जाना
चाहिए। 16जो व्यक्ति अपने खेत में हो
उसे अपना कपड़ा लेने के लिए वापस नहीं
जाना चाहिए। 17लेकिन शोक है गर्भवती
महिलाओं और दूध पिलाने वाली माताओं
पर। 18यह प्रार्थना करना कि यह सब सर्दी
के दिनों में न हो।
19क्योंकि इन दिनों में ऐसी पीड़ा होगी
जैसी कि दुनिया की शुरुआत से न तो हुयी
और न ही कभी होगी। 20यदि प्रभु इन दिनों
को कम न करते तो कोई भी व्यक्ति बच
नहीं सकता था, लेकिन चुने हुए लोगों के
लिए इन दिनों को कम किया है।
21तब यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, यह
रहा मसीह, वह है मसीह, तो उनकी बाते
को न मानना। 22इसलिए कि झूठे मसीह
और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और
चिन्ह और चमत्कार दिखाएँगे ताकि लोगों
को गुमराह करें यहाँ तक कि चुने हुओं को
भी। 23लेकिन सावधान रहना, मैंने पहले
ही से तुम्हें सब कुछ बता दिया है,
24लेकिन उन दिनों में पीड़ा के बाद,
सूरज की रोशनी जाती रहेगी और चाँद
भी रोशनी न देगा। 25आसमान से सितारे
गिरने लगेंगे और आसमान की ताकतें
हिलायी जाएँगी।
26तब वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी शक्ति
और शान (महिमा) के साथ बादलों पर
आते देखेंगे। 27तब परमेश्वर अपने स्वर्ग
दूतों को, अपने चुनों हुओं को चारों दिशाओं
से इकट्ठे करने के लिए भेजेंगे, ताकि पृथ्वी
के दूर से दूर तक के लोगों को इकट्ठा करें।
28अंजीर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो।
जैसे ही इसकी डालियाँ कोमल हो जाती
हैं और पत्तियाँ निकलती हैं तुम समझ जाते
हो कि गर्मी का मौसम पास है। 29इसी तरह
जब तुम इन घटनाओं को होते देखो, तो
जान लेना कि यीशु आने वाले हैं बल्कि
दरवाज़े पर हैं।
30मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक

13:11 मत्ती 10:19-20.
"पवित्र आत्मा"- मत्ती 3:16; यूहन्ना 14:16-17.
13:12-13 मत्ती 10:21-22.
13:14 मत्ती 24:15.
"जहाँ इसे नहीं होना चाहिए"- इसका मतलब है। प्रार्थना भवन। तुलना करें 1 थिस्स. 2:4
13:29 'जानो कि पास में है' दूसरे शब्दों में "जानो कि यह पास है"।

यह सब बातें पूरी न हो जाएँ, यह पीढ़ी
खत्म नहीं होगी। 31आकाश और पृथ्वी
समाप्त हो जाएँगे, लेकिन मेरी बातें बिना
पूरी हुए नहीं रह सकती। 32लेकिन उस पल
के बारे में कोई नहीं जानता, यहाँ तक कि
न स्वर्ग के स्वर्गदूत, न पुत्र (मैं) केवल
परमेश्वर पिता जानते हैं।

33सावधान रहो, जागते और प्रार्थना करते
रहो, क्योंकि तुम्हें निश्चित समय मालूम
नहीं है। 34मनुष्य का पुत्र (मैं खुद) एक
ऐसे जन की तरह है जो अपने घर से कहीं
दूर है। जिसने घर छोड़ने से पहले अपने
सेवकों में से हर एक को अधिकार और
ज़िम्मेदारी दी और द्वार रक्षक को जागते
रहने के लिए कहा।

35इसलिये सतर्क रहो, क्योंकि तुम्हें
मालूम नहीं। कब वह (घर का मालिक)
आएगा - शाम को, बीच रात, भोर को या
सुबह। 36कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक
आए और तुम्हें सोता पाए। 37जो मैं तुम से
कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ, जागते रहो!

14 फ़सह का त्यौहार और अखमीरी
रोटी के त्यौहार में दो दिन बाकी
थे और प्रधान पुरोहित और शास्त्री इस
ताक में थे कि यीशु को धोखे से कैसे
पकड़ें और मार डालें। 2लेकिन इन लोगों
ने कहा, "त्यौहार के दिन नहीं, नहीं तो
बड़ा बवाल खड़ा हो जाएगा।"

3जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कुष्ट
रोगी के घर में खाना खाने बैठे हुए थे,
एक महिला खुशबूदार इत्र के बर्तन के
साथ आयी (यह बहुत कीमती था) उसने
बर्तन को तोड़कर यीशु के सिर पर इत्र
उण्डेल दिया। 4उन में से कुछ लोगों ने
नाराज़गी दिखाते हुए कहा, "इस इत्र को
क्यों बर्बाद किया गया? 5इसे तीन सौ चाँदी
के सिक्कों में बेचकर गरीबों की मदद की
जा सकती थी। कई लोगों ने इस बात की
शिकायत की।

6यीशु बोले, "उसे क्यों तंग करते हो?
उसे छोड़ दो। उसने मेरे लिए अच्छा काम
किया है। 7इसलिए कि गरीब लोग तो
तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे, जब कभी तुम
चाहोगे उनकी मदद कर सकोगे। लेकिन
मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा। 8उसने
वह किया, जो वह कर सकती थी। इसके
पहले कि मैं दफ़नाया जाऊँ, उसने मेरा
अभिषेक किया है। 9मैं तुम से सच कहता
हूँ कि इस दुनिया में जहाँ कहीं खुशी की
खबर दी जाएगी, जो कुछ उसने किया है,
लोग उसकी याद करेंगे।"

10यहूदा इस्करियोती जो बारह में से
एक था, यीशु को उनके हाथ पकड़वाने
के लिए प्रधान पुरोहितों के पास पहुँचा।
11जब उन्हों ने यह सुना, वे खुश हुए और
कुछ रकम देने की प्रतिज्ञा की। सही समय
आने पर वह यीशु को पकड़वाने वाला था।

12अखमीरी रोटी के त्यौहार के पहले
दिन जब फ़सह का मेम्ना मारा जाना था,

13:30 "यह पीढ़ी"- या यह युग
13:32-37 यहाँ यीशु के दोबारा आने के बारे में सतर्क रहने को कहा गया है। (पद 33,35,37)
14:1 "फ़सह"- निर्ग. 12:11; लैव्य. 23:5-6.
14:4 शिष्यों ने ऐसा कहा था (मत्ती 26:8)। इस में यहूदा सब से आगे था (देखें यूहन्ना 12:4-5)। यह एक दूसरा अवसर रहा होगा। यूहन्ना 12:2 के नोट्स देखे।
14:5 "तीन सौ चाँदी के सिक्कों"- यूनानी में "तीन सौ दीनार" । यह एक मजदूर की 300 दिन की मजदूरी थी।
14:11 विश्वासघात और दुनिया के सब से अच्छे और पवित्र व्यक्ति को मारने का अवसर। इस से बढ़कर बुरे चरित्र का और अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है? बुराई करना संकोच के साथ एक बात है, लेकिन उस में खुश होना दूसरी बात, जो कि बहुत बुरी है।
14:12 "फ़सह का मेम्ना"- निर्ग. 12:3-11 देखें यूहन्ना 1:29.

यीशु के शिष्यों ने पूछा, "आप कहाँ चाहते हैं कि हम फ़सह खाने की तैयारी करें?"

13यीशु ने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, "नगर में जाओ, और तुम्हें पानी के मटके लिए हुए एक व्यक्ति मिलेगा, उसके साथ हो लेना। 14जिस घर में वह दाखिल हो, उस मकान मालिक से कहना, "कि गुरु जानना चाहते हैं कि वह मेहमान घर कहाँ है, जहाँ अपने शिष्यों के साथ वह फ़सह खाएँगे? 15वह तुम्हें एक बड़ा तैयार किया हुआ कमरा दिखला देगा, वहीं हम सब के लिए तैयारी करना।"

16यीशु के शिष्य वहाँ से चल पड़े, नगर में आए और जैसा उनको बताया गया था, सब कुछ वैसा ही पाया। उन्हों ने फ़सह की तैयारी की। 17शाम को वह बारहों के साथ आए।

18जब वे यीशु के साथ बैठे खा रहे थे, यीशु ने कहा, "मैं सच-सच कहता हूँ, कि मेरे साथ खाने वालों में से एक मुझे धोखा देगा।"

19वे सभी दुखी हुए और एक दूसरे से कहने लगे, क्या वह मैं हूँ?, दूसरा बोला, "क्या वह मैं हूँ?"

20यीशु ने जवाब में कहा, बारहों में से एक जन है, जो बर्तन में मेरे साथ हाथ डाल रहा है। 21जैसा मनुष्य के पुत्र के बारे में लिखा है, वैसा तो उसके साथ होगा ही, लेकिन उस व्यक्ति पर अफ़सोस, जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा। अच्छा होता यदि वह व्यक्ति पैदा ही नहीं हुआ होता।

22जब वे खा ही रहे थे यीशु ने रोटी ली, और आशीष दी। फिर यीशु तोड़ कर उन्हें देते गए और कहा, "लो खाओ, यह मेरी देह है।"

23यीशु ने प्याला लिया, धन्यवाद करके उन्हें दिया और सभी ने उस में से पीया।

24यीशु ने उन से कहा, "यह नई वाचा के खून को दिखाता है, जो बहुत से लोगों के लिए बहाया जाने वाला है। 25मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक कि परमेश्वर के राज्य में मैं नए अंगूर का रस न पीऊँ, मैं फिर अंगूर का रस नहीं पीऊँगा।"

26गीत गाने के बाद वे सब जैतून के पहाड़ पर चले गए।

27यीशु ने उन से कहा, "इसी रात तुम सब मेरी खातिर ठोकर खाओगे। क्योंकि लिखा है, 'मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें बिखर जाऊँगा।" 28मेरे जी उठने के बाद, तुम से पहिले मैं गलील जाऊँगा।'

29लेकिन पतरस बोल उठा, चाहे, सभी ठोकर खाएँ मैं तो टस से मस नहीं होऊँगा।

30यीशु बोले, "मैं सच-सच कहता हूँ, आज ही रात, इसके पहले कि मुर्गा बाँग दे, तुम तीन बार मेरा इन्कार कर चुके होगे।"

31उसने ज़ोर डालते हुए उन से कहा, "चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े मैं आपका इन्कार नहीं करूँगा।" यह बात सभी ने दोहरायी।

32वे सभी गतसमनी नामक स्थान पर आए।

33वहाँ यीशु शिष्यों से बोले, "तुम यहीं बैठो जब मैं प्रार्थना करता हूँ।" पतरस, याकूब और यूहन्ना को यीशु ने साथ लिया, यीशु अपने मन में बहुत परेशान और व्याकुल हो रहे थे। 34यीशु ने उन से कहा, मेरा मन बहुत दुखी है, और लगता है मेरी जान निकल जाएगी। यहीं ठहरो और जागते रहो।

35थोड़ी दूर जाकर यीशु ज़मीन पर नतमस्तक हो गए और यह बिनती की, "कि यदि हो सके तो यह समय खत्म हो

14:13-15 घटनाक्रम को विस्तार से देखना जो कभी पहले न हुआ हो, उसके बारे में मसीह की योग्यता का यह एक और उदाहरण है।

14:24 मत्ती 26:28 मसीह के खून के बहाए जाने का कारण बताता है।

14:27 जकर्याह 13:7

जाए।" 36यीशु ने कहा, "अब्बा, पिता, आपके लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझ से दूर कर दीजिए। फिर भी मेरी नहीं लेकिन आपकी इच्छा पूरी हो।"

37वापस आने पर यीशु ने सभी को सोते पाया और पतरस से कहा, "शमौन, क्या तुम सो रहे हो? क्या एक घंटा भी तुम मेरे साथ जाग न सके?" 38जागते और प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम प्रलोभन में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है लेकिन देह कमज़ोर है। 39फिर से यीशु आगे गए और प्रार्थना की और वही शब्द कहे।

40वापस लौटने पर यीशु ने फिर उन्हें सोते पाया, उनकी आँखें भारी थीं और वे नहीं जानते थे कि क्या जवाब दें। 41तीसरी बार यीशु आए और उन से बोले, "क्या तुम अब तक सो रहे हो, और आराम कर रहे हो? काफ़ी हो चुका। वह समय आ चुका है देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ धोखे से सौंपा जाएगा। 42उठो, यहाँ से चलें। देखो, मुझे धोखा देने वाला पास ही में है।"

43यीशु यह कह ही रहे थे, बारहों में से एक, यहूदा आया। उसके साथ प्रधान पुरोहित और शास्त्रियों द्वारा भेजे गए लोगों की एक बड़ी भीड़ थी। उनके हाथों में तलवार और लाठियाँ थीं। 44यीशु को पकड़वाने वाले ने एक इशारा दिया था, वह यह कि मैं जिसको चूमूँ वही है। उसे पकड़कर सुरक्षा के साथ ले चलना।

45वहाँ आते ही यहूदा ने यीशु को चूमा और कहा, "गुरुजी।"

46उन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया। 47पास खड़े लोगों में से एक ने अपनी तलवार निकाली और वार कर दिया, जिससे प्रधान पुरोहित के सेवक का कान कट गया।

48यीशु बोल उठे, "क्या जैसे चोर को पकड़ा जाता है तुम लोग मुझे पकड़ने तलवारों और लाठियों के साथ आए हो?" 49प्रार्थना भवन में सदैव मैं सिखाया करता था, उस समय तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। लेकिन पवित्रशास्त्र (बाइबल) की बात पूरी होनी थी।

50तभी सारे शिष्य वहाँ से भाग खड़े हुए।

51एक जवान आदमी जो अपने बदन पर कपड़ा डाले था, उनके साथ चल पड़ा। कुछ जवानों ने उसे पकड़ना चाहा, 52वह अपना कपड़ा छोड़ भाग गया।

53यीशु को प्रधान पुरोहित के पास ले जाया गया। जहाँ सभी प्रधान पुरोहित बुजुर्ग अगुवे, और शास्त्री इकट्ठे थे। 54पतरस दूर से चला आ रहा था। वह प्रधान पुरोहित के आँगन तक पहुँचकर सेवकों के साथ बैठ आग तापने लगा।

55प्रधान पुरोहित और सारी सभा यीशु को मौत की सज़ा सुनाने के लिए गवाही की तलाश में थे, लेकिन वे कामयाब नहीं हुए। 56बहुतों ने यीशु के खिलाफ़ झूठी गवाही दी, लेकिन उनकी गवाही मेल नहीं खाती थी। 57तब कुछ लोगों ने खड़े होकर झूठी गवाही देते हुए कहा, 58"हम ने उसे कहते सुना था, "कि यह प्रार्थना भवन जिसे हाथ से बनाया गया है मैं बर्बाद

14:36 "अब्बा"- अरामी भाषा का शब्द है, जिसका मतलब है "पिता" । यह परमेश्वर के लिए संभव था कि यीशु को दुख और मौत से बचाए, लेकिन यह प्रभु की इच्छा नहीं थी। यीशु को बचाने का मतलब होता मुक्ति की योजना को रद्द कर के इन्सान को उसकी दुर्दशा में छोड़ देना।

14:51-52 सिर्फ़ मरकुस इस विषय में लिखता हैं। यह संभव है कि नवजवान मरकुस ही था, नहीं तो यह समझना बहुत मुश्किल होता कि उसने घटना के बारे में क्यों लिखा।

14:54 बताता है कि पतरस आँगन में क्यों गया।

14:55 "सभा"- सेन्हेड्रिन - मत्ती 5:22.

14:58 यह यीशु के उन शब्दों को घुमाना है जो यूहन्ना 2:19 में हैं। यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह इन्सान के बनाए मन्दिर (या इमारत) को ढा देंगे।

कर दूँगा, और मैं तीन दिन में हाथों से न बनाया हुआ दूसरा बना दूँगा।"

59इसके बावजूद भी उनकी गवाहियों में समानता नहीं थी।

60प्रधान पुरोहित ने खड़े होकर यीशु से पूछा, "तुम्हारे खिलाफ़ आरोप लग रहे हैं, तुम कुछ जवाब नहीं दे रहे हो"

61यीशु खामोश रहे। प्रधान पुरोहित ने फिर से पूछा, "क्या तुम मसीह हो, परमप्रधान के पुत्र?"

62यीशु बोले, "बेशक तुम मनुष्य के पुत्र को सारे अधिकार के साथ और आसमान में बादलों के साथ आते हुए देखोगे भी।"

63तब प्रधान पुरोहित ने अपने कपड़े फाड़ते हुए कहा, "अब हमें और किसी गवाही की क्या ज़रूरत? 64तुम ने ईश निन्दा सुन ली है, तुम्हारा क्या ख्याल है?" उन सभी ने यीशु को आरोपी कहा और मौत की सज़ा के लायक।

65कुछ लोग यीशु पर थूकने लगे, कुछ ने यीशु के मुँह को ढाँक, मारते हुए कहा, "भविष्यवाणी करो"। अधिकारियों ने भी यीशु को थप्पड़ मारे।

66जब पतरस नीचे आँगन में था, प्रधान पुरोहित की एक नौकरानी आयी। 67पतरस को आग तापते हुए देख वह बोल उठी, "तुम भी तो यीशु नासरी के साथ थे।"

68इन्कार करते हुए पतरस बोला, "तुम कहना क्या चाह रही हो, मुझे समझ में नहीं आ रहा है।" पतरस जब वहाँ से बाहर आँगन में गया, तभी मुर्गे ने बाँग लगायी। 69पतरस को फिर से देखकर, वहाँ खड़े लोगों से वह कहने लगी, "यह भी उन्हीं में से एक है।"

70पतरस फिर मुकर गया। कुछ समय के बाद, निकट खड़े हुए लोगों ने फिर पतरस से कहा, "हो ना हो, तुम भी उन्हीं में से एक हो। तुम गलीली हो और तुम्हारी बोली भी उन्हीं की जैसी है।"

71लेकिन पतरस कसम खाकर कहने लगा, "जिस व्यक्ति के बारे में तुम कह रहे हो, उसे तो मैं जानता भी नहीं।"

72दूसरी बार मुर्गे ने बाँग दी। तब पतरस को वह बात याद आयी, जो यीशु ने उससे कही थी, इसके पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तुम तीन बार मेरा इन्कार कर चुकोगे। यह सोचकर वह रो पड़ा।

15 सुबह सवेरे प्रधान पुरोहितों ने बुज़ुर्ग, अगुवों और शास्त्रियों के साथ सलाह मशविरा किया। फिर यीशु को बान्धकर, ले जाकर पीलातुस के सुपुर्द कर दिया। 2पिलातुस ने पूछा क्या तुम यहूदियों के राजा हो? जवाब में यीशु ने कहा, "हाँ ऐसा ही है।"

3प्रधान पुरोहितों ने तमाम बातों में यीशु पर दोष लगाया, लेकिन यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया।

4पिलातुस ने पूछा, "क्या तुम उत्तर दोगे? देखो, तुम्हारे विरोध में क्या-क्या कहा जा रहा है।"

5इसके बावजूद यीशु ने उत्तर न दिया, इसलिए पीलातुस आश्चर्य चकित था।

6त्यौहार के समय पिलातुस जनता की बिनती के अनुसार एक कैदी को मुक्त किया करता था। एक कैदी का नाम बरअब्बा था। 7अपने साथी बलवईयों और हत्यारों के साथ वह भी हिरासत में था। 8जैसा पिलातुस लोगों के लिए किया करता था, वैसी ही माँग वे करने लगे।

14:69 आँगन का पूरा झुण्ड पतरस के बारे में शक कर रहा था। बहुतों ने उस से सवाल किए या उसके बारे में दूसरों को बताया - नौकरानी (ने दो बार) दूसरी लड़की (मत्ती 26:71) एक आदमी (लूका 22:58), कुछ वे लोग जो आग के आस-पास थे। खासकर महा पुरोहित के नौकर का रिश्तेदार (यूहन्ना 18:25-26)

15:1 मत्ती 27:1-2; मत्ती यहूदा की आत्म हत्या के बारे में बताता है, लेकिन मरकुस उसे छोड़ देता है।

15:2-47 मत्ती 27:11-61.

9पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तुम
चाहते हो, कि यहूदियों के राजा को तुम्हारे
लिए मुक्त कर दूँ?" 10उसे अच्छी तरह
से मालूम था, कि प्रधान पुरोहित ने ईर्ष्या
के कारण यीशु को उसके हाथ सौंपा था।
11लेकिन प्रधान पुरोहित ने लोगों को
उकसाया कि वह बरअब्बा को यीशु की
जगह छोड़ दे। भीड़ ने चिल्लाकर वैसी ही
माँग की।
12पिलातुस ने फिर कहा, जिसे तुम
यहूदियों का राजा कहते हो, "उसका मैं
क्या करूँ?"
13वे सभी चिल्ला उठे, "उसे क्रूस पर
चढ़ाओ।"
14पिलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने बुरा
क्या किया है?" वे और ज़ोर से चिल्लाने
लगे, "हाँ उसे क्रूस पर चढ़ाओ।"
15इसलिए लोगों को खुश करने के लिए
पीलातुस ने बरअब्बा को मुक्त कर दिया।
और यीशु को कोड़े लगवाकर उसने यीशु
को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंपा।
16सिपाही यीशु को प्रीटोरियन हॉल की
तरफ़ ले चले। उन्हों ने पूरी रोमी फ़ौजी
टुकड़ी को भी बुलवाया। 17उन लोगों ने
यीशु को बैंजनी कपड़े पहनाए और काँटों
का ताज सिर पर रखा। 18वे उसको प्रणाम
करने लगे, "यहूदियों के राजा, प्रणाम"।
19उन लोगों ने यीशु के सिर पर लाठी मारी,
थूका और झुक कर वन्दना की।
20मज़ाक करने के बाद, वे यीशु का
बैंजनी चोगा हटाकर उन्हीं के कपड़े
पहनाकर क्रूस पर चढ़ाने के लिए चल पड़े।
21उन लोगों ने एक शमौन कुरेनी नामक
व्यक्ति जो अलेक्ज़ेन्डर और रूफ़ुस का
पिता था, मजबूर किया कि क्रूस उठाकर
ले चले। वह तो उसी रास्ते से सिर्फ़ गुज़र
ही रहा था।
22यीशु को वे गुलगुता (खोपड़ियों के
स्थान) तक ले गए। 23उन्हों ने यीशु को
मुर्र मिली दाखरस पीने को दी, लेकिन यीशु
ने पीने से इन्कार कर दिया।
24जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके, पर्ची
डालकर उन्हों ने कपड़े बाँट लिए। 25सुबह
नौ बजे उन्हों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया।
26यीशु के लिए आरोप पत्र इस तरह का
थाः "यहूदियों का राजा"। 27यीशु की दोनों
तरफ़ उन लोगों ने दो चोरों को, एक को
बाएँ और दूसरे को दायीं तरफ़ क्रूस पर चढ़ा
दिया। 28यह लेख, कि "यीशु अपराधियों
के साथ गिना गया" पूरा हुआ।
29उस रास्ते से गुज़रने वाले लोग अपने
सिरों को हिला-हिलाकर यीशु का मज़ाक
यह कह कर उड़ाते जा रहे थे, "मन्दिर के
ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले!
30क्रूस पर से उतर कर अपने आप को
बचा लो।"
31इसी तरह से प्रधान पुरोहित भी
शास्त्रियों के साथ मिलकर आपस में ठट्ठे
से कह रहे थे, "इस ने दूसरों को बचाया,
लेकिन अपने आप को न बचा सका"।
32अब इस्राएल का राजा और मसीह, क्रूस
से नीचे उतर आए तो हम देखें और विश्वास
करें।" जिन्हें यीशु के साथ लटकाया गया
था, उन्हों ने भी यीशु की बेइज़्ज़ती की।
33दोपहर बारह बजे आसमान में अँधेरा
छा गया, जो दोपहर के तीन बजे तक रहा।
34करीब तीन बजे यीशु ऊँचे आवाज़ में
चिल्लाए, "इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी?"
इसका मतलब है, मेरे परमेश्वर, मेरे
परमेश्वर, आप ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
35पास में खड़े कुछ लोगों ने यह सुनकर
कहा, "देखो, वह एलिय्याह को बुला रहा
है।" 36उन में से एक, दाखरस और सिरके
में डुबोए हुए स्पंज को एक लकड़ी के सिरे

15:14 मत्ती 27:25 में उन भयंकर शब्दों को देखें जो यहूदियों ने कहे।

15:21 एलेक्ज़ेण्डर और रूफ़ुस दो ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें शायद उस समय के लोग जानते थे।

15:25 तीसरा पहर मतलब नौ बजे - यूनानी में सूरज निकलने के बाद तीसरा घण्टा।

15:27 पवित्र और निष्कलंक परमेश्वर के पुत्र को अपराधी समझा गया।

पर रखकर उनको चुसाने के लिए उनकी तरफ़ दौड़ा और बोला, "उसे अकेला छोड़ दो। अब देखते हैं कि एलिय्याह आकर उसे नीचे उतारता है कि नहीं।"

37तब यीशु ने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर अपनी जान दे दी।

38प्रार्थना भवन (मन्दिर) का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो हिस्सों में बँट गया।

39जब वहाँ सामने खड़े सूबेदार ने यीशु को इस तरह से चिल्लाते और जान देते सुना तो, कहा, "यह आदमी सचमुच में परमेश्वर का बेटा था।"

40कुछ दूरी पर कुछ खड़ी महिलाएँ देख रही थीं। उन में से मरियम मगदलीनी, योसेस और छोटे याकूब की माँ मरियम और शलोमी थीं। 41जब यीशु गलील में थे तभी से ये यीशु के साथ रहकर उनकी सेवा किया करती थीं। इसके अलावा यरूशलेम से आने वाली अन्य महिलाएँ भी थीं।

42,43अरिमतियाह का यूसुफ़ सभा का आदरणीय सदस्य था। वह परमेश्वर के राज्य का इन्तज़ार करता रहा था। उसने बड़ी हिम्मत के साथ सब्त के पहले वाला दिन, जो कि तैयारी का दिन था, शाम को आकर पिलातुस से यीशु की देह माँगी।

44पीलातुस को यह आश्चर्य हुआ कि यीशु मर चुके थे। उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि यीशु ने कब प्राण छोड़ दिए। 45सूबेदार से पूरी जानकारी हासिल करने के बाद पिलातुस ने यीशु की देह उसे दे दी।

46उसने यीशु की लाश को उतारकर, अपने साथ लायी हुयी बढ़िया मलमल में लपेटा और चट्टान को खोदकर बनायी गयी कब्र में रख दिया। 47मरियम मगदलीनी और यीशु की माँ मरियम देख रहीं थी, कि यीशु की लाश को कहाँ रखा गया।

16 सब्त के खत्म होते ही मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम ने खुशबूदार पदार्थों को खरीदा, ताकि वे यीशु की लाश पर मल सकें। 2सूरज निकलने पर ही था कि बड़े सवेरे, हफ़्ते के पहले दिन, वे कब्र पर पहुँची। 3आपस में वे एक दूसरे से बोली, "हमारे लिए पत्थर को कब्र से कौन हटाएगा?"

4वहाँ पहुँचने पर उन्हों ने देखा कि पत्थर जो बहुत बड़ा था, पहले ही से लुढ़का हुआ है 5भीतर जाने पर उन्हों ने एक जवान को लम्बा सफ़ेद चोगा पहने दाहिनी तरफ़ बैठे देखा और बहुत डर गयीं।

6उस व्यक्ति ने कहा, "डरो मत, तुम यीशु नासरी की तलाश में हो, जिन्हें क्रूस

15:37 "जान"- मत्ती द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द - अपनी आत्मा दे दी यूनानी भाषा में भिन्न है।

15:42 सूरज डूबने पर यूहदी सब्त शुरु होता था और दूसरे दिन की शाम तक चलता था। इस दौरान कोई काम नहीं किया जाता था। (देखें निर्ग. 20:8-11) इसलिए यूसुफ़ यीशु की देह (लाश) को सूरज डूबने से पहले क्रूस पर से उतारना चाहता था। यहाँ जिस सब्त के बारे में है वह शायद, खास था जिससे अखमीरी रोटी का त्यौहार शुरु होता था। यह वह साधारण सब्त नहीं था जो हर शनिवार को आता था। कुछ ज्ञानी लोगों का कहना है बृहस्पतिवार को और कुछ कहते हैं, शुक्रवार को। दिन के बारे में झगड़ने से कोई फ़ायदा नहीं है।

15:43 "सभा"- का मतलब है 'सेन्हेड्रिन' - मत्ती 5:22 के नोट्स देखें। यूसुफ़ उन लोगों की तरफ़ नहीं था जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था (लूका 23:51)।

"परमेश्वर के राज्य"- मत्ती 4:17.

15:45 क्रूस पर चढ़ाए जाने के छः घण्टे बाद यीशु मर गए थे। अक्सर क्रूस पर चढ़ाए लोग 2,3 दिन तक ज़िन्दा रहा करते थे। इसलिए यीशु की लाश को सौंपने से पहले उसने यह निश्चित किया, कि यीशु मर चुके हैं। यहूदी अगुवों को भी मालूम हो गया था कि यीशु मर चुके हैं - देखें मत्ती 27:62-66.

16:1-8 मत्ती 28:1-8.

16:1 किसी भी लाश को दफ़नाने से पहले यह एक प्रथा थी। साफ़ ज़ाहिर है कि इन को विश्वास नहीं था कि यीशु मसीह जी उठेंगे।

16:5 यह एक स्वर्गदूत था जो इन्सान के रूप में आया था (मत्ती 28:2)। उत्पत्ति 16:7 में स्वर्गदूत पर देखें।

पर चढ़ाया गया वह यहाँ नहीं हैं क्योंकि जी उठे हैं। यह जगह देखो जहाँ पर उनको रखा गया था। 7तुरन्त यहाँ से जाकर उनके शिष्यों और पतरस को बताओ कि वह तुम से पहले गलील पहुँचेंगे। जैसा उन्हों ने तुम्हें बतलाया था, तुम उन्हें वहाँ देखोगी।"

8जल्दी कब्र से निकलकर वे दौड़ने लगीं, क्योंकि वे डर और आश्चर्य से भरी हुयी थीं।

9सप्ताह के पहले दिन बड़े सवेरे जी उठने के बाद यीशु सब से पहले मरियम मगदलीनी से मिले, जिसमें से यीशु ने सात भूतों को निकाला था। 10जो लोग यीशु के साथ रहे थे लेकिन अब रो-धो रहे थे, उनको जाकर उसने बताया। 11जब उन्हें पता लगा कि यीशु ज़िन्दा हैं और उसने यीशु को देखा भी है फिर मी विश्वास नहीं किया।

12इसके बाद यीशु दूसरे रूप में उन दो को दिखे जो नगर के बाहरी इलाके में चले जा रहे थे। 13दोनों ने भी जाकर बाकी लोगों को बताया, लेकिन उन्हों ने भी विश्वास नहीं किया।

14ग्यारह शिष्य जब खाना खाने बैठे हुए थे, यीशु अचानक उपस्थित हो गए और उन्हें उनकी मन की कठोरता और अविश्वास के लिए डाँटा। इसलिए कि यीशु के जी उठने के बाद देखने वालों की बात पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया था।

15यीशु बोले, "सारी दुनिया में जाकर सभी लोगों को खुशी की खबर दो। 16जो विश्वास लाएगा बपतिस्मा लेगा, मुक्ति पा

16:7 पतरस जिसने यीशु का इन्कार किया था, उसके लिए यीशु के पास एक खास संदेश था। यीशु नहीं चाहते थे कि पतरस निराश हो और अपने आपको धिक्कारे। जो लोग भयंकर गलती कर डालते हैं, कभी-कभी प्रभु उनको बहुत स्नेह दिखाते हैं।

16:8 इसका मतलब यह है कि उन्हों ने किसी से तब तक बात नहीं की जब तक वे शिष्यों के पास आ नहीं गए (मत्ती 28:8; लूका 24:9,19)

16:9-20 कुछ ज्ञानी कहते हैं, कि ये पद मूल मरकुस लिखित, पुस्तक का हिस्सा नहीं थे, किसी ने बाद में इन्हें जोड़ दिया। यह सच भी है कि कुछ शुरुआती पाण्डुलिपियों में ये पद नहीं हैं लेकिन दूसरों में हैं। ऐसा कोई सबूत नहीं कि शुरुवाती पुस्तक में ये पद नहीं हैं। हमारा विश्वास है कि चाहे मरकुस ने इन पदों को लिखा था या किसी और ने, पवित्र आत्मा की प्रेरणा उन्हें मिली थी। इसलिए इन्हें परमेश्वर के कहे शब्द (वचन) ही समझे जाना चाहिए।

16:9 यूहन्ना 20:11-18; लूका 8:2.

16:11 इस गवाही के बिना भी उन्हें मसीह के जी उठने पर विश्वास करना चाहिए था। यीशु ने खुद कहा था कि मैं जी उठूँगा (9:31; मत्ती 16:21; 17:22-23)। लेकिन गवाहों के बावजूद वे अपने अविश्वास में बने रहे (पद 12,13; देखें लूका 24:13-32) यह इस बात का सबूत है कि वे अन्धविश्वासी और आसानी से झाँसे में आने वाले लोग नहीं थे, जो बिना सबूत विश्वास कर लें।

16:14 "ग्यारह"- खास शिष्य थे यहूदा को छोड़कर (मत्ती 27:5) । ध्यान दें ये शिष्य इन्सान थे, जैसे हम हैं। हमारी तरह शक शुबाह करने वाले थे। उन्हें भी प्रभु की डाँट की ज़रूरत थी।

16:15 1 कुरि. 15:1-8 में इस खुशी की खबर के बारे में बताया गया है। मसीह अपने शिष्यों को आज भी आज्ञा देते हैं कि शिष्य मुक्ति के विषय में सब को बताएँ (मत्ती 28:18-20; लूका 24:47-48; यूहन्ना 20:21; प्रे.काम 1:8) इसलिए कि यीशु सब के लिए मरे (2 कुरि. 5:14-15; 1 तीमु. 2:6; 1 यूहन्ना 2:2) वह चाहते हैं कि सभी सुनें कि उन्हों ने क्या किया। हर विश्वासी को भरसक कोशिश करनी चाहिए कि दुनिया के लोग यह खबर सुनें।

16:16 मत्ती 3:6 में बपतिस्में पर नोट्स पढ़ें। मुक्ति विश्वास से है (यूहन्ना 3:16; 5:24; 6:47; प्रे.काम 16:31; रोमि. 1:7; 3:22,25; गल. 2:16; इफ़ि. 2:8-9)। मुक्ति के लिए बपतिस्मा ज़रूरी नहीं है। लेकिन जो यीशु पर भरोसा करते हैं, सार्वजनिक रूप से उन्हें बपतिस्मा के द्वारा साक्षी देनी चाहिए। यदि एक व्यक्ति कहता है कि यीशु पर भरोसा है, लेकिन बपतिस्मा नहीं लेता है, तो उसके विश्वासी होने पर शक है। यीशु ने यह नहीं कहा 'जो बपतिस्मा न ले' नाश हो जाएगा, लेकिन जो "विश्वास न करे"। तुलना करें यूहन्ना 3:17-18.

जाएगा। लेकिन जो विश्वास नहीं लाएगा, सज़ा से मुक्त नहीं हो पायेगा। 17जो लोग भरोसा (विश्वास) करेंगे, उन में ये निशान होंगे। 18वे अन्य भाषा बोलेंगे, चाहे साँप उनके हाथ में लिपट जाए और कोई उन्हें ज़हर भी दे दे, उनका कुछ नुकसान नहीं होगा वे लोग बीमार लोगों पर हाथ रखेंगे और बीमार लोग अच्छे हो जाएँगे।"

19उन लोगों से बातचीत करने के बाद यीशु को ऊपर उठा लिया गया और तब से वे परमेश्वर के अधिकार के साथ वहाँ हैं। 20शिष्य वहाँ से निकलकर सब जगह जाने लगे। और यीशु उन लोगों के साथ चिन्हों को दिखाकर अपनी सच्चाई का सबूत देते रहे।

16:17-18 इसका मतलब यह नहीं है कि इस पूरे कृपा युग में हर एक के जीवन में ये चिन्ह होंगे। यह सच है कि बहुत से सच्चे विश्वासियों में इन में से एक भी चिन्ह नहीं है। यह उनके बारे में है जो विश्वास करेंगे न कि वे जिनके पास असाधारण विश्वास होगा या बहुत ज़्यादा समर्पित जीवन होगा। पूरी मण्डली या सारी दुनिया के विश्वासियों में न कि हर एक में दुष्टात्माओं को निकालने के बारे में देखें (प्रे.काम 5:16; 8:7; 16:18; 19:13-16) अन्य भाषा पर प्रे. काम 2:4; 10:46; 19:6; 1 कुरि. 12:10,28,30; 13:1; 14:2-39.

साँप के सम्बन्ध में लूका प्रे.काम 28:3-5 इसका मतलब यह नहीं कि जानबूझ कर कोई साँप को हाथ से पकड़े, अपने विश्वास को दिखाने के लिए। (तुलना करें मत्ती 4:6-7)। बाईबल (नए नियम) में हम कभी नहीं पाते हैं कि किसी को ज़हर दिया गया। इसका मतलब यह भी नहीं कि ऐसी घटनाएँ भी नहीं रही होंगी जिनका ब्यौरा नए नियम में नहीं है। बीमारों के ठीक होने के बारे में देखें (प्रे.काम 28:8-9; याकूब 5:14-15) अपनी वाह-वाह सुनने के लिए ये चिन्ह नहीं दिए गए थे। यह भी जानना ज़रूरी है कि ये चिन्ह परमेश्वर के हाथ (वश) में हैं। वे दे सकते हैं और नहीं भी, जहाँ उनकी इच्छा है। यहाँ पर दिए कुछ चिन्ह, आत्मिक वरदानों की लिस्ट में नहीं हैं। देखें रोमि. 12:6-8 और 1 कुरि. 12 अध्याय। यहाँ पर नोट्स को देखें।

16:19 लूका 24:50-51; प्रे.काम 1:9-11; भजन 110:1 । दाहिना हाथ 'अधिकार' और 'आदर' का पद है। (तुलना करें मत्ती 28:18; फ़िलि. 2:9.

16:20पद 17,18; इब्रा. 2:4)